सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
इंदौर
शनिवार, 25 जुलाई, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 293, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

पीएम मोदी के इंस्टाग्राम वीडियो के राजनीतिक संकेत क्या हैं?

ईशाद्रिता लाहिड़ी

बुधवार रात 11 बजकर 52 मिनट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशभर में युवाओं के विरोध प्रदर्शनों से जुड़े मुद्दे पर अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक वीडियो पोस्ट किया। कई मायनों में यह उन तरीक़ों से अलग था, जिनसे प्रधानमंत्री आम तौर पर गंभीर राष्ट्रीय मुद्दों पर देश को संबोधित करते हैं। साल 2016 में नोटबंदी की घोषणा से लेकर कोविड-19 महामारी के दौरान दिए गए संबोधनों और हाल ही में संसद में परिसीमन विधेयक पारित न होने पर राष्ट्र के नाम दिए गए संबोधन तक, भारत के लोग पीएम मोदी को प्राइम टाइम में बोलते हुए देखने के आदी रहे हैं। इस दौरान सरकारी यूट्यूब चैनल और टीवी चैनल उनका संबोधन लाइव प्रसारित करते रहे हैं। हालांकि, बुधवार को उनका संदेश आधी रात के क़रीब इंस्टाग्राम वीडियो के रूप में आया, जिसे फ़ोन के फ्रंट कैमरे से वर्टिकल फ़ॉर्मेट में रिकॉर्ड किया गया था। उन्होंने अपने संदेश की शुरुआत भी आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द 'मित्रों' की बजाय 'दोस्तों' कहकर की।

'राजनीतिक विश्लेषकों ने कहा कि पीएम के संदेश को इस तरह तैयार किया गया था ताकि वह उन लोगों तक प्रभावी ढंग से पहुंचे, जिनके लिए इसे बनाया गया था। वरिष्ठ राजनीतिक पत्रकार नीरजा चौधरी ने कहा, 'बिल्कुल साफ़ है कि उन्होंने इंस्टाग्राम का इस्तेमाल इसलिए किया क्योंकि यह स्टूडेंट्स का प्लेटफ़ॉर्म है। यह सिर्फ़ प्रदर्शनकारियों का ही नहीं, बल्कि देशभर के युवाओं द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला प्लेटफ़ॉर्म है। 'सख्त' कार्रवाई और पेपर लीक के मामलों की सुनवाई के लिए फास्ट-ट्रैक अदालतें स्थापित करने का ज़िक्र करके प्रधानमंत्री स्टूडेंट्स को यह संदेश देना चाहते थे कि उनकी बात को गंभीरता से लिया जा रहा है। दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान पढ़ाने वाले प्रोफ़ेसर चंद्रचूड़ सिंह ने भी कहा कि प्रधानमंत्री के लिए यह ज़रूरी था कि वह स्टूडेंट्स को खुद सीधे संबोधित करते हुए दिखाई दें। उनकी मौजूदगी अहम है और शायद सरकार को लगता है कि उनका सीधा हस्तक्षेप इस आग को शांत कर सकता है।'

'प्रधानमंत्री का इंस्टाग्राम पर दिया गया संबोधन इस विरोध प्रदर्शन की एक व्यापक प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है, जिसमें युवा फ़ोन, सस्ते माइक्रोफ़ोन और सेल्फ़ी स्टिक के सहारे इसी प्लेटफ़ॉर्म का इस्तेमाल अपनी बात रखने के लिए कर रहे हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय की 22 वर्षीय छात्रा सखी कहती हैं कि जेन ज़ी को लगता है कि देश की मुख्यधारा का मीडिया उनकी नुमाइंदगी नहीं कर रहा है। हमें लगा कि हमारी कवरेज की कमी है। हम जो कहना चाहते थे, उसे तुरंत सामने नहीं रख पा रहे थे। इसलिए लोग इंस्टाग्राम पर आए। अगर मीडिया हमें ब्लैकआउट भी कर दे, तब भी हमारे पास अपना प्लेटफ़ॉर्म था। कॉकरोच जनता पार्टी भी इंस्टाग्राम के ज़रिए लोगों तक पहुंची।'

'सखी बताती हैं कि 20 जुलाई के विरोध प्रदर्शन के दौरान जो कुछ उन्होंने देखा, उसके बाद इंस्टाग्राम पर पोस्ट करना उनके लिए 'जज़्बाती राहत' जैसा था। उस दिन जब हज़ारों प्रदर्शनकारी सेंट्रल दिल्ली की सड़कों पर उतरे, तब सोशल मीडिया पर पुलिस के लाठीचार्ज और आंसू गैस के इस्तेमाल के कई वीडियो सामने आए. कई प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर बर्बरता का आरोप लगाया। मैं चाहती थी कि लोगों को पता चले कि पुलिस ने क्या किया। मैं उन्हें पुलिस की बर्बरता के सबूत दिखाना चाहती थी।'

उस दिन सखी ने तीन रील पोस्ट कीं, जो बाद में वायरल हो गईं। इनमें से एक को अब तक 3 करोड़ 56 लाख बार देखा जा चुका है। उनके फ़ॉलोअर्स की संख्या क़रीब 3 हजार से बढ़कर लगभग 70 हजार हो गई है। सोशल मीडिया रिसर्च के अनुमानों के अनुसार, भारत में इंस्टाग्राम के 50 करोड़ से ज़्यादा अकाउंट हैं, जिनमें से अधिकांश 18 से 30 वर्ष आयु वर्ग के लोगों के हैं। सखी बताती हैं कि यह प्लेटफ़ॉर्म उनके हमउम्र लोगों के बीच इतना लोकप्रिय क्यों है। फ़ेसबुक हमारे माता-पिता की पीढ़ी के लिए है, व्हाट्सऐप हमसे पहले की पीढ़ी के लिए है, लेकिन इंस्टाग्राम जेन ज़ी का प्लेटफ़ॉर्म है। ख़ासतौर पर भारत में टिकटॉक जैसे शॉर्ट-फ़ॉर्म कंटेंट ऐप पर प्रतिबंध लगने के बाद, इंस्टाग्राम वही जगह है, जहां हम उस रूप में कंटेंट देखते हैं जो हमें सबसे ज़्यादा पसंद आता है।

साल 2014 में मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद भारतीय जनता पार्टी और खुद प्रधानमंत्री को लंबे समय तक भारतीय राजनीति में डिजिटल प्रचार और संदेश देने की रणनीति का अगुआ माना जाता रहा है। लेकिन जेन ज़ी एक अलग सोशल मीडिया माहौल में पली-बढ़ी है। ऐसे में क्या बीजेपी और सरकार को अपनी डिजिटल रणनीति पर फिर से विचार करने की ज़रूरत है? राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारक रतन शारदा ने एक्स पर एक पोस्ट में विरोध प्रदर्शनों के ख़िलाफ़ प्रभावी जवाबी नैरेटिव तैयार करने में विफल रहने के लिए बीजेपी की सोशल मीडिया सिस्टम को ज़िम्मेदार ठहराया।

उन्होंने लिखा, 'बीजेपी मीडिया का ज़मीनी स्तर से कोई जुड़ाव नहीं दिखता। साफ़ तौर पर कोई फ़ीडबैक तंत्र नहीं है और महीनों से बढ़ रहे युवाओं के ग़ुस्से को समझा नहीं गया। सत्तारूढ़ पार्टी की सोशल मीडिया रणनीति 'मीम्स और व्हाटअबाउटरी' से आगे नहीं बढ़ सकी।

'हालांकि, राजनीतिक विश्लेषक राहुल वर्मा का कहते हैं कि 'व्हाट्सऐप पीढ़ी' और 'इंस्टाग्राम पीढ़ी' के बीच साफ़ विभाजन रेखा खींचना सही नहीं होगा। हम जानते हैं कि इस विरोध प्रदर्शन में शामिल ज़्यादातर युवा और मध्यम वर्ग पहले बड़े पैमाने पर बीजेपी के मतदाता रहे हैं। इसलिए यह कहना सही नहीं होगा कि बीजेपी को उनसे संवाद करना नहीं आता। लेकिन मौजूदा विरोध प्रदर्शन मोदी सरकार के खिलाफ़ पहले हुए आंदोलनों से अलग हैं। किसानों के आंदोलन या सीएए विरोधी प्रदर्शनों के विपरीत, जो विशेष नीतिगत मुद्दों पर केंद्रित थे, यह विरोध प्रशासनिक विफलताओं की वजह से है। इसलिए सरकार के पास कोई जवाबी नैरेटिव नहीं था।' राहुल के अनुसार 'प्रधानमंत्री ने इंस्टाग्राम का इस्तेमाल इसलिए किया क्योंकि जेन ज़ी यही प्लेटफ़ॉर्म इस्तेमाल करती है और इस बार सरकार अपना संदेश पहुंचाने के लिए हर उपलब्ध माध्यम का इस्तेमाल करेगी।' वहीं, प्रोफ़ेसर चंद्रचूड़ सिंह का कहना है कि सोशल मीडिया पर जेन ज़ी की नाराज़गी और उससे निपटने के सरकारी प्रयासों को केवल डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के नज़रिए से देखना सही नहीं होगा। युवाओं की निराशा कहीं ज़्यादा गहरी, व्यापक और तीव्र है, जिसे केवल डिजिटल अपील के ज़रिए नहीं संभाला जा सकता। जहां तक बीजेपी के सोशल मीडिया सेल की बात है, भारत के युवाओं की ऊर्जा और उनके संकल्प पर कोई भी भारी नहीं पड़ सकता।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित रिपोर्ट के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

तुम्हे पता भी है ?
तुम्हारे होने में इक अलग सी महक है..
जब कोई तुम्हारे स्वाभिमान को
चूर किए निकल जाता है
तब जो आँसू तुम अपनी आँखों में रोक
लेती हो,
वे प्रेरणा हैं तुम्हारी।
अपनी आकांक्षाओं को त्यागकर
जब मुस्कुराहट के आड़
फिर से कर्तव्य मार्ग पर
कदम बढाती हो
तब धैर्य के फूल
जो तुम्हारी राहों में खिलने लगते है
वे याद दिलाते हैं
पतझ़र के बाद आने वाले बसंत की।
गिरने के बाद
जब खुद की उंगली पकडकर
फिर से खडे रहने की कोशिश करती हो,
तब, तुम ढल रहे भानू की तरह
आत्यंतिक सुंदर प्रतीत होती हो
तुम्हे पता भी है,
तुम्हारे होने में इक अलग सी महक है..
जिस से तुम अब भी अंजान हो।

- संजीवनी देशपांडे

'पेपर लीक' पर संसद से सड़क तक संग्राम

● मोदी सरकार-सीजेपी समर्थकों में नहीं बन पाई बात

धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे पर अटकी गाड़ी, पार्टी अड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉकरोच जनता पार्टी और सरकार के बीच शुक्रवार को दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में बैठक हुई। इसमें सरकार की तरफ से केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा, जितेंद्र सिंह और सीजेपी की तरफ से सौरभ दास, आशुतोष रांका शामिल हुए। बैठक के बाद सीजेपी के प्रवक्ताओं ने कहा,हम धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे पर कोई समझौता नहीं करेंगे। सरकार ने मुआवजा देने और प्रदर्शनकारियों के खिलाफ दर्ज केस वापस लेने पर सहमति जताई है। केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने बताया, 'दो घंटे की बातचीत में सीजेपी ने सरकार के सामने 3 प्रमुख मांगें और परीक्षा प्रणाली में सुधार के 5 सुझाव रखे हैं। हमने ने इस पर विचार करने के लिए कल तक का समय मांगा है। संगठन ने सरकार के सामने 3 प्रमुख मांगें और परीक्षा प्रणाली में सुधार के 5 सुझाव रखे हैं।' उन्होंने बताया कि सीजेपी ने 3 मुख्य मांगें रखीं। परीक्षा सुधार से जुड़े 5 सुझाव हमारे सामने रखे। हमने उनसे कहा है कि सरकार के भीतर इस पर चर्चा होगी। उधर संसद में विपक्ष भी इस मामले में सरकार के खिलाफ हावी रहा। इस मामले को लेकर शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे पर अड़ा रहा।

राहुल बोले-धर्मेंद्र प्रधान क्रिमिनल शिक्षा मंत्री, इस्तीफा दें

कांग्रेस नेता ने कहा-उनकी वजह से हजारों लोग सड़क पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। राहुल गांधी ने शुक्रवार को कहा कि धर्मेंद्र प्रधान एक अपराधी शिक्षा मंत्री हैं। उन्हें हटाया जाना चाहिए। वे हमारे एजुकेशन सिस्टम के ध्वस्त होने का प्रतीक हैं। उन्हें जाना ही होगा। उन्हीं की वजह से हजारों लोग बाहर हैं। राहुल ने पैलेट गन से घायल छात्रों से मुलाकात की। वे एक घायल छात्र को साथ में लेकर मीडिया के सामने आए। उन्होंने छात्र के हाथ में लगे घाव को दिखाया।

नड्डा ने जूस पिलाया, वांगचुक ने अनशन तोड़ा

27वें दिन खत्म की भूख हड़ताल, कहा-तीन मांगों पर लिखित आश्वासन मिला

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पेपर लीक के खिलाफ 27 दिन से भूख हड़ताल पर बैठे सोनम वांगचुक ने गुरुवार देर रात अपना अनशन खत्म कर दिया। केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा और जितेंद्र सिंह गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल पहुंचे, जहां नड्डा ने वांगचुक को जूस पिलाकर अनशन तुड़वाया। वांगचुक ने शुक्रवार सुबह जारी वीडियो संदेश में कहा कि पिछले दो दिन से सरकार के साथ उनकी लगातार बातचीत चल रही थी। इस दौरान उनकी तीन प्रमुख मांगों पर चर्चा हुई। सरकार की ओर से इन मांगों पर लिखित आश्वासन मिलने के बाद उन्होंने भूख हड़ताल खत्म करने का फैसला लिया। वांगचुक ने कहा, सरकार ने प्रदर्शनकारी छात्रों पर केस दर्ज नहीं करने पर सहमति जताई है।

मुख्यमंत्री ने पन्ना में किया 184.83 करोड़ रुपए की लागत के विकास कार्यों का भूमि-पूजन एवं लोकार्पण

युवाओं के लिए मध्यप्रदेश के 4 महानगरों में प्रारंभ होंगे फास्ट ट्रैक कोर्ट : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत अपनी गौरवशाली संस्कृति और वसुधैव कुटुम्बकम के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए विश्व कल्याण के लिए प्रयास कर रहा है। हमारी संस्कृति में सबके कल्याण और मानवता से प्रेम करने की बात कही गई है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने युवाओं के हित में उनकी शिक्षा और रोजगार से जुड़े मामलों की सुनवाई के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाने की घोषणा की है। मध्यप्रदेश के चारों महानगरों- भोपाल, जबलपुर, इंदौर और ग्वालियर में इसी प्रकार के फास्ट ट्रैक कोर्ट स्थापित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अगले साल पन्ना मेडिकल कॉलेज का लोकार्पण किया जाएगा। नीट के अभ्यर्थियों को डॉक्टर बनने का अवसर मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव पन्ना में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के अंतर्गत 35 लाख से अधिक हितग्राहियों को लगभग 210 करोड़ रुपए की राशि का सिंगल क्लिक से अंतरण किया। उन्होंने प्रतीक स्वरूप विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं के हितग्राहियों एवं आत्मनिर्भर ग्राम पंचायतों के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को कृषि कल्याण वर्ष के उपलक्ष्य में हल भेंट कर सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बुंदेलखंड की धरती सर्वश्रेष्ठ है। यह महाराज छत्रसाल, वीर आल्हा-ऊदल की धरती है। सौभाग्यशाली व्यक्ति ही ऐसी पुण्य धरा पर आ सकता है। यहां पन्ना में धरती के नीचे हीरा निकलता है, लेकिन धीरे-धीरे पानी की कमी होती गई। लोगों ने पलायन शुरू कर दिया, जिसे हमारी सरकार ने रोका। अब हमारी सरकार ने बुंदेलखंड की समृद्धि के लिए भारतरत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के संकल्प के अनुसार अंतर्राज्यीय केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना की शुरुआत की है। केंद्र सरकार ने 1 लाख करोड़ की इस परियोजना के लिए 90 प्रतिशत राशि देने की स्वीकृति प्रदान की। नदी जोड़ो परियोजना किसानों के लिए समृद्धि लेकर आएगी। राज्य सरकार ने तय किया है कि ऐसी परियोजनाओं में किसी की जमीन, मकान और दुकान आती है तो उसे उचित मुआवजा दिया जाएगा। इस परियोजना से बुंदेलखंड परिदृश्य बदलने वाला है।

पन्ना क्षेत्र के पर्यटन को बढ़ाएगा नया अनोखा ग्लास फ्लोर और व्यू प्वाइंट

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने पन्ना के बृहस्पति कुंड पर 8 करोड़ लागत से सौंदर्यीकरण के अंतर्गत निर्मित ग्लास फ्लोर और व्यू प्वाइंट सहित अन्य विकास कार्यों का लोकार्पण किया। पन्ना में निर्मित यह कांच के फ्लोर वाला व्यू प्वाइंट यहां के पर्यटन को बढ़ाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इसे देखने देश-विदेश से लोग आएंगे। भारत के पर्यटकों को भी अन्य देशों में जाने की आवश्यकता नहीं है। यहां के प्राकृतिक जल प्रपात पर्यटन में वैश्विक केंद्र बनने के योग्य हैं।

संयुक्त परिवार एक संपत्ति है, लोग इसे समझते नहीं हैं

● संयुक्त परिवार को लेकर सुप्रीम कोर्ट की अहम टिप्पणी

कहा-माता-पिता की जगह मोबाइल ले रहा, यह आपदा है

नई दिल्ली (एजेंसी)। संयुक्त परिवार प्रणाली के लगातार खत्म होने और एकल परिवारों में बच्चों को समय देने के बजाय मोबाइल-गैजेट्स थमा देने पर सुप्रीम कोर्ट ने गहरी चिंता और नाराजगी जताई है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यदि माता-पिता की जगह गैजेट्स (मोबाइल) ले लेंगे, तो यह स्थिति समाज के लिए विनाशकारी साबित होगी और आने वाली पीढ़ी पारिवारिक रिश्तों व बंधनों से पूरी तरह अनजान हो जाएगी। न्यायमूर्ति सुंदरेश ने कहा कि हाल ही में वे एक रेस्तरां में थे और उन्होंने देखा कि एक परिवार ने खाना खाते समय बच्चे को व्यस्त रखने के लिए उसे फोन दे दिया। उन्होंने कहा, अगर माता-पिता की जगह गैजेट्स ने ले ली, तो यह एक आपदा है। भविष्य में ऐसा और भी ज्यादा होगा। संयुक्त परिवार एक संपत्ति है, और लोग इसे समझते नहीं हैं। खुशी भौतिक चीजों से नहीं, बल्कि मानवीय बंधन और रिश्तों से मिलती है। हम मशीनों की तरह होते जा रहे हैं।

यह बदलते समाज का प्रतिबिंब है

दरअसल, हाल ही में पति-पत्नी की हत्या की घटनाओं में, जिनमें सोनम रघुवंशी का मामला भी शामिल है, इसका विश्लेषण करते हुए स्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस पीबी वराले की पीठ ने कहा कि यह बदलते समाज का प्रतिबिंब है। पीठ ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी अधिक बुद्धिमान और जानकार है, लेकिन आज की पीढ़ी अत्यधिक दबाव झेलने में सक्षम नहीं है। कोर्ट ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आजकल लोग व्हाट्सएप पर प्रसारित संदेशों पर भरोसा करते हैं और उन्हें ज्ञान मान लेते हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20°c न्यूनतम 18°c

2

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार, 25 जुलाई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

भोजशाला के पास नमाज की जगह पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

सीजेआई बोले– अब मंगलवार को होगी सुनवाई; मुस्लिम पक्ष बोला– 2 जुमे की नमाज छूटी

धार (नप्र)। एमपी के धार भोजशाला-कमाल मौला मस्जिद मामले में सुप्रीम कोर्ट में शुक्रवार को सुनवाई हुई। प्रशासन और मुस्लिम याचिकाकर्ताओं की ओर से नमाज की जगह को लेकर पक्ष रखा गया।

शुक्रवार को सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा, सरकारी तंत्र और दोनों समुदायों के प्रतिनिधि आपस में बातचीत कर रहे हैं। वे मिलकर एक उपयुक्त स्थान तलाशने की कोशिश कर रहे हैं। कृपया इस मामले की सुनवाई मंगलवार या बुधवार को सूचीबद्ध की जाए।

मुस्लिम पक्षकारों की ओर से सीनियर एडवोकेट हुजैफा अहमदी ने कहा मैंने इस मामले का सबसे पहले बुधवार को उल्लेख किया था और अदालत को बताया था कि हम पहले ही लगातार दो जुमे की नमाज से वंचित रह चुके हैं।

सुनवाई के बाद सुप्रीम कोर्ट ने अंतरिम आवेदन (आईए) के लिए मंगलवार (29 जुलाई) की तारीख तय की है। बता दें, कोर्ट ने 22 जुलाई को प्रशासन से भोजशाला परिसर के पास ही नमाज के लिए जमीन देने को कहा था।

सीनियर एडवोकेट हुजैफा ने कहा- दो जुमे की नमाज से वंचित रहे-सीनियर एडवोकेट हुजैफा अहमदी ने कहा- हम पहले ही लगातार दो जुमे की नमाज से वंचित रह चुके हैं। आपकी लॉर्डशिप के आदेश के बावजूद प्रशासन न तो परिसर से सटी हुई और न ही आसपास कोई वैकल्पिक जगह उपलब्ध करा रहा है। इस मामले को आज सूचीबद्ध किया जाना था, लेकिन हैरानी की बात है कि इसे कॉज लिस्ट में शामिल नहीं किया गया। प्रशासन अब भी आदेश के मुताबिक परिसर से सटी हुई या आसपास की जगह देने से इनकार कर रहा है। समुदाय के नेताओं के साथ बैठक हुई, लेकिन जो स्थान हमें दिया जा रहा है, वह सड़क मार्ग से करीब 1.3 किलोमीटर दूर है।

देर रात बैठक हुई, प्रशासन की दी जगह पर नहीं बनी सहमति

गुरुवार देर रात जिला प्रशासन और मुस्लिम समुदाय के प्रतिनिधियों के बीच करीब दो घंटे तक बैठक चली, लेकिन नमाज के वैकल्पिक स्थान को लेकर सहमति नहीं बन पाई। प्रशासन ने अन्य संभावित स्थानों का प्रस्ताव रखा। इन प्रस्तावों को भी अस्वीकार कर दिया गया। मुस्लिम समाज का कहना है कि उन्हें उनके पारंपरिक स्थान पर ही नमाज अदा करने की अनुमति दी जाए। सुप्रीम कोर्ट के आदेश में भी नमाज के लिए भोजशाला के नजदीक स्थान उपलब्ध कराने की बात कही गई है।

शुक्रवार को प्रशासन द्वारा निर्धारित मालीवाड़ा में चालीसपीर दरगाह के पास जुमे की नमाज अदा करने के लिए कोई नहीं पहुंचा। सुरक्षा के मद्देनजर प्रशासन और पुलिस की ओर से मौके पर सभी इंतजाम किए गए थे। धार के सदर अब्दुल समद ने कहा- प्रशासन सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन नहीं कर रहा है। चालीसपीर दरगाह के पास निर्धारित स्थान पर नमाज नहीं पढ़ी जाएगी। इसके बजाय जुमे की नमाज आसपास की मस्जिदों में अदा की जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

ईरान पर सबसे बड़े हमले की तैयारी में अमेरिका

- ट्रम्प बोले-फैसला लेना बाकी ईरान ने कहा-इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी

तेहरान/वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि अमेरिका ईरान पर सबसे बड़ा हमला करने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा तैयारी पूरी है, अब सिर्फ फैसला लेना बाकी है। ट्रम्प ने यह भी कहा कि ईरान ने अभी तक पर्याप्त दर्द नहीं झेला है। ट्रम्प के बयान के बाद ईरान ने भी तुरंत जवाब दिया। विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि अगर अमेरिका ने हमले जारी रखे तो उसे

इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि युद्ध खत्म करने का रास्ता बातचीत है, नए हमले नहीं। इधर, ब्रिटेन ने भी अपनी सेना को अलर्ट पर रखा है। ब्रिटिश सरकार का कहना है कि जरूरत पड़ने पर उसकी सेना देश की सुरक्षा के लिए तैयार है। इससे पहले ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड ने चेतावनी दी थी कि अगर अमेरिका ने ब्रिटेन के सैन्य ठिकानों का इस्तेमाल किया तो उन्हें भी निशाना बनाया जा सकता है।

सऊदी अरब के दो जहाजों पर हमला– यमन के हूती विद्रोहियों ने रेड सी में सऊदी अरब के दो तेल टैंकर एन्सेलिया और लैला पर बैलिस्टिक मिसाइलों, क्रूज मिसाइलों और ड्रोन से हमला किया। संगठन का कहना है कि दोनों जहाजों में आग लग गई। बाब अल–मंदेब स्ट्रेट पार करने की कोशिश कर रहे कम से कम 10 जहाजों को अपना रास्ता बदलना पड़ा है। अब ये जहाज अफ्रीका के दक्षिणी सिरे केप ऑफ गुड होप के रास्ते लंबा सफर तय कर रहे हैं।

ब्रिक्स समिट के लिए तारिक रहमान को भेजा न्योता

- बांग्लादेश ने भारत यात्रा पर रख दी है शर्त, फंसा पेच

ढाका (एजेंसी)। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बांग्लादेशी पीएम तारिक रहमान को 12–13 सितंबर को नई दिल्ली में होने वाले ब्रिक्स समिट में शामिल होने का न्योता दिया है। बांग्लादेश की विदेश राज्य मंत्री शमा उबैद ने गुरुवार को भारत की ओर से समिट के लिए दावत मिलने की पुष्टि की है। हालांकि बांग्लादेश की ओर से ऐसे संकेत दिए गए हैं, जिससे तारिक रहमान का भारत आना मुश्किल

लगता है। इसके पीछे शेख हसीना को भारत में शरण मिलना कारण बनता दिख रहा है। भारत में बांग्लादेश के राजदूत हमीदुल्लाह रियाज ने सीधे ब्रिक्स समिट की बात नहीं की है लेकिन कहा है कि शेख हसीना के भारत में रहते हुए तारिक रहमान का यहां आना मुश्किल है। उन्होंने कहा कि शेख हसीना ना सिर्फ भारत में हैं बल्कि यहां रहते हुए ऐसे बयान दे रही हैं, जो बांग्लादेश–विरोधी हैं। ऐसे में हमारे प्रधानमंत्री दिल्ली कैसे आ सकते हैं। **चीन की यात्रा का आर्थिक महत्व**– नयनिमा बसु के साथ एक इंटरव्यू में हमीदुल्लाह रियाज ने भारत–बांग्लादेश के रिश्ते पर बात की है। उनसे पूछा गया था कि चीन की यात्रा के बाद क्या प्रधानमंत्री तारिक रहमान इस साल भारत का दौरा भी करेंगे।

नीट पेपर लीक के खिलाफ प्रदेश भर में प्रदर्शन

इंदौर के टंट्या भील चौराहे पर दिल्ली जैसे हालात, रीवा-उमरिया, बड़वानी-श्योपुर में धरने पर स्टूडेंट

भोपाल (नप्र)। प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक और दिल्ली में स्टूडेंट्स पर लाठीचार्ज के विरोध में मध्य प्रदेश के कई शहरों में प्रदर्शन जारी हैं। इंदौर के टंट्या भील चौराहे पर युवा धरने पर बैठे हैं। बारिश भी इनका जोश ठंडा नहीं कर पा रही है। इनका कहना है कि परीक्षा में पारदर्शिता और पेपर लीक के जिम्मेदारों पर कार्रवाई होने तक उनका आंदोलन जारी रहेगा।

बड़वानी में प्रदर्शनकारी प्लास्टिक शीट से अस्थायी शेड बनाकर उसके नीचे बैठे हैं। वे मंच पर संविधान की कॉपी और महापुरुषों की तस्वीरों को रखकर विरोध जता रहे हैं। इनकी तीन प्रमुख मांगों में सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में पारदर्शिता सुनिश्चित करना, पेपर लीक मामलों की निष्पक्ष और समयबद्ध जांच कराना और नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा शामिल हैं।

श्योपुर में समस्त छात्र शक्ति के बैनर तले बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स ने पीजी कॉलेज से रैली निकाली। वे चार किलोमीटर पैदल मार्च करते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचे। यहां करीब दो घंटे तक धरना देकर नारेबाजी की। राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन भी सौंपा।

बैतूल के अंबेडकर चौक पर युवाओं ने प्रदर्शन करते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग उठाई। ऑडिटोरियम में छात्रों की क्रमिक भूख हड़ताल भी जारी है।

सतना में पुलिस से भिड़े कांग्रेस–एनएसयूआई कार्यकर्ता, गाड़ियों में तोड़फोड़ की

सतना में भी कांग्रेस और एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने संयुक्त हल्ला बोल प्रदर्शन किया। कलेक्ट्रेट में घुसने की कोशिश कर रहे कार्यकर्ताओं ने पुलिस से धक्कामुक्की की। बैरिकेड्स तोड़ने की कोशिश की। आखिरकार, पुलिस ने एनएसयूआई जिलाध्यक्ष राहुल सोनी को हिरासत में ले लिया। इसके बाद कार्यकर्ताओं ने पुलिस वाहन में तोड़फोड़ शुरू कर दी। कराबी 40 मिनट तक हंगामा चला।

सीधी के चुरहट में युवा कांग्रेस ने निकाली रैली, एसडीएम को ज्ञापन सौंपा– दिल्ली में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की गिरफ्तारी, छात्रों पर लाठीचार्ज और सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक के साथ हुए कथित अपमान के विरोध में सीधी जिले के चुरहट में युवा कांग्रेस ने पैदल मार्च निकाला। केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए एसडीएम आनंद पांडे को प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा।

रतलाम में एनएसयूआई का धरना, केंद्रीय शिक्षा मंत्री का इस्तीफा मांगा– नीट पेपर लीक मामले में एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने रतलाम के छत्रीपुल स्थित अंबेडकर सर्किल पर धरना दिया। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे के नारे लगाए।

रीवा में बीजेपी दफ्तर घेरने निकले एनएसयूआई कार्यकर्ता, पुलिस ने हिरासत में लिया– पेपर लीक और दिल्ली में छात्रों पर लाठीचार्ज के विरोध में एनएसयूआई ने सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन किया। कार्यकर्ता रैली के रूप में नारे लगाते हुए बीजेपी दफ्तर का घेराव करने निकले। हालांकि, पुलिस ने उन्हें बीच में ही रोक लिया। समझाइश के बावजूद न मानने पर पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया।

केन्द्र सरकार युवाओं की भविष्य सुरक्षा के लिए पूर्ण प्रतिबद्ध: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुक्रवार को बताया कि गुरुग्राम स्थित मेदांता अस्पताल में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जेपी नड्डा एवं केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने श्री सोनम वांगचुक से भेंट कर विद्यार्थियों से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर सरकार की पहल, दृष्टिकोण और आगामी योजनाओं की रूपरेखा साझा की। सकारात्मक एवं सार्थक संवाद के उपरांत श्री वांगचुक ने अपना अनशन समाप्त करने का निर्णय लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार युवाओं के भविष्य की सुरक्षा के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। पेपर लीक जैसे विषयों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई, परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता और विश्वसनीयता को अधिक सुदृढ़ करने एवं प्रत्येक विद्यार्थी के हितों की रक्षा के लिए निरंतर आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

गुजरात से लेकर महाराष्ट्र तक बारिश ने मचाया तांडव

अहमदाबाद-सूरत समेत 5 शहरों में पानी भरा, बाजार डूबे

यूपी में सड़क पर नाव चली, असम में बाढ़ से त्राहिमाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूरे देश में मानसून की बारिश जारी है। दक्षिण गुजरात में भारी बारिश से कई जिले बाढ़ की चपेट में हैं। वलसाड के उमरगाम तालुका में 16 घंटों में 43 इंच बारिश हुई, जिससे निचले इलाके डूब गए हैं। राज्य के 11 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। नवसारी में बाढ़ में फंसे लोगों को हेलीकॉप्टर से एयरलिफ्ट किया गया। अहमदाबाद, सूरत में पानी भर गया। वाव-थराद जिले में बाजार डूब गए। वहीं महाराष्ट्र के भी बुरे हाल हैं। कई जिलों में बारिश आपदा बन गई है। यूपी में पिछले 10 दिनों से हो रही बारिश के चलते गंगा, यमुना समेत 10 नदियां उफान पर हैं। सीतापुर में पानी सड़क पर भर गया। ग्रामीण नाव से आ-जा रहे हैं। पटना, भोजपुर, बक्सर, गोपालगंज, सारण, वैशाली और सिवान समेत बिहार के 19 जिलों में आज भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। वहीं, राजस्थान के बांसवाड़ा और डूंगरपुर में अलर्ट जारी है।

गुवाहाटी में मूसलाधार बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त– असम की राजधानी गुवाहाटी में पिछले कुछ घंटों से हो रही मूसलाधार बारिश ने शहर की रफ्तार पर पूरी तरह से ब्रेक लगा दिया है। पूरे शहर में पानी भर जाने के कारण सड़कों पर कई किलोमीटर लंबा ट्रैफिक जाम लग गया है, जिसमें हजारों गाड़ियां और लोग घंटों से फंसे हुए हैं। सोशल मीडिया पर एक साथ जारी कई वीडियो में देखा जा सकता है कि बारिश इतनी तेज थी कि देखते ही देखते शहर के ज्यादातर इलाके जलमग्न हो गए। मुख्य सड़कों, बाजारों और रिहायशी इलाकों में घुटनों तक पानी भर गया है। सड़कों पर जलभराव के कारण कई गाड़ियां और बाइक पानी में बंद हो गई, जिससे गाड़ियों की लंबी-लंबी कतारें लग गईं।

हिमाचल में चलती कार पर चट्टानें गिरीं, 13 की मौत

हिमाचल प्रदेश के लाहौल–स्पीति में शुक्रवार को उदयपुर–किलाड़ सड़क पर कडू नाला के पास लैंडस्लाइड हो गई। इसकी चपेट में टाटा सूमो टैक्सी आ गई। गाड़ी में 15 लोग सवार थे, 13 की मौत हो गई।

बिहार के सरकारी स्कूलों में फिर से हाफ-डे शनिवार!

- 7 दिनों में होगा फैसला, सीएम सम्राट चौधरी ने दी जानकारी

पटना (एजेंसी)। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने मानसून सत्र के दौरान विधान परिषद को बताया कि बिहार सरकार द्वारा एक सप्ताह के भीतर यह निर्णय लिए जाने की उम्मीद है कि क्या सरकारी स्कूलों को शनिवार को आधे दिन के कार्यक्रम में वापस लाया जाना चाहिए। यानी आधे दिन स्कूल और आधे दिन छुट्टी। सत्ताधारी गठबंधन और विपक्ष दोनों के सदस्यों ने यह मुद्दा उठाया और सरकार से शनिवार के पहले वाले समय को बहाल करने और स्कूल के समय को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप करने का आग्रह किया। इस चर्चा पर प्रतिक्रिया देते हुए सम्राट चौधरी ने कहा कि शनिवार को आधे दिन की कक्षाएं फिर से शुरू करने के प्रस्ताव की जांच की जाएगी और सात दिनों के भीतर निर्णय लिया जाएगा।

विधान परिषद में उठा मुद्दा

एमएलसी नवल किशोर यादव, संजीव सिंह और जीवन कुमार ने सरकारी स्कूलों में शनिवार को पूरे दिन की कक्षाएं जारी रखने को लेकर शिक्षा विभाग से सवाल किया। विधायकों ने याद दिलाया कि पूर्व शिक्षा मंत्री ने सदन को आश्वासन दिया था कि शनिवार को आधे दिन की पढ़ाई फिर से शुरू की जाएगी। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि मौजूदा समय सारिणी को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों के अनुरूप बनाया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अवधि निर्धारित की गई।

10 साल जेल और 10 करोड़ रुपए जुर्माना!

- प्रदर्शनों के बीच मोदी कैबिनेट का बड़ा फैसला

नीट पेपर लीक को लेकर बनाया है सख्त प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पेपर लीक मामले को लेकर छात्रों के जारी विरोध-प्रदर्शन के बीच केंद्र सरकार पेपर लीक और नकल के खिलाफ मौजूदा कानूनों को और सख्त करने की योजना बना रही है। प्रधानमंत्री के देर रात जारी वीडियो संदेश में और कार्रवाई का वादा करने के एक दिन बाद सरकार पब्लिक एग्जामिनेशन (अनुचित साधनों की रोकथाम) एक्ट, 2024 में संशोधन करने की योजना बना रही है ताकि इसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सके। बताया जा रहा है कि पेपर लीक मामलों में 10 साल तक की जेल और 10 करोड़ रुपये तक का जुर्माने का प्रावधान किया जा सकता है।

पीएम मोदी कैबिनेट बैठक में सख्त संशोधनों को मंजूरी– रिपोर्ट के अनुसार, सूत्रों ने बताया है कि शुक्रवार दोपहर को कैबिनेट बैठक में पब्लिक एग्जामिनेशन (अनुचित साधनों की रोकथाम) एक्ट, 2024 में प्रस्तावित संशोधनों को मंजूरी दे दी गई है। संभावित बदलावों के बारे में बताते हुए सूत्रों ने कहा कि कानून में पेपर लीक मामलों की सुनवाई के लिए फास्ट-ट्रैक कोर्ट स्थापित करने का प्रावधान जोड़ा गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार सुबह पोस्ट किया था कि इसके लिए फास्ट-ट्रैक कोर्ट स्थापित करने का निर्देश दिया है।

सोमवार को पेश हो सकता है ये बिल

ऑर्गनाइज्ड क्राइम (संगठित अपराध) के मामलों में, 5 से 10 साल की जेल और कम से कम 1 करोड़ रुपये का जुर्माना हो सकता है। कैबिनेट की मंजूरी के बाद, सोमवार को लोकसभा में संशोधन बिल पेश किए जाने की उम्मीद है। विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को दावा किया था कि पिछले 10 सालों में 150 बार पेपर लीक हुए हैं और एक भी दोषी को सजा नहीं हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार रात एक वीडियो बयान में वादा किया कि शुक्रवार को पेपर लीक मामलों में और कार्रवाई की जाएगी। दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा ऐसे मामलों की सुनवाई के लिए फास्ट–ट्रैक कोर्ट की घोषणा के बाद पीएम मोदी ने एक्स पर यह पोस्ट किया। देर रात का यह वीडियो बयान एक ही दिन में इस मुद्दे पर मोदी का दूसरा पोस्ट था। पीएम ने कहा–दोस्तों, मैं जानता हूं कि पेपर लीक कोई मामूली मुद्दा नहीं है।

होटलों में ठहरता, एआई के फर्जी बिलों से बेच देता चोरी का सामान

इंदौर पुलिस के हत्थे चढ़ा शातिर चोर, लाखों का सामान जब्त

इंदौर। पलासिया थाना पुलिस ने एक ऐसे शातिर चोर को गिरफ्तार किया है, जिसने चोरी के सामान को खपाने के लिए आधुनिक तकनीक का सहारा लिया। आरोपी चोरी किए गए लैपटॉप, टैबलेट और मोबाइल फोन को असली खरीद का दिखाने के लिए एआई टूल्स की मदद से बड़े शोरूम के नाम पर फर्जी खरीद बिल तैयार करता था। इन नकली बिलों के आधार पर वह चोरी का सामान इंदौर के अलग-अलग इलेक्ट्रॉनिक बाजारों में बेच देता था। गिरफ्तार आरोपी की पहचान प्रतीक लिखर के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार वह खुद को मैकेनिकल इंजीनियर बताता था और पिछले लगभग 6 महीने से इंदौर के अलग-अलग होटलों में ठहरकर चोरी की वारदातों को अंजाम दे रहा था। पूछताछ के दौरान उसने यह भी दावा किया कि वह पहले नोएडा में आयकर विभाग में टैक्स असिस्टेंट के पद पर कार्यरत था, लेकिन पुलिस की जांच में उसका यह दावा संदिग्ध पाया गया। पुलिस के मुताबिक 20 जुलाई को बड़वानी प्लाजा के पास आरोपी संदिग्ध परिस्थितियों में घूमता मिला। पूछताछ के दौरान उसने खुद को आयकर अधिकारी बताकर पुलिस को गुमराह करने की कोशिश की, लेकिन तलाशी लेने पर उसके पास से ताला तोड़ने में इस्तेमाल होने वाले औजार बरामद हुए। इनमें हाइड्रोलिक रिबार कटर, पेचकस और अन्य उपकरण शामिल थे।

लैपटॉप चोरी कबूली - सख्ती से पूछताछ करने पर आरोपी ने कई चोरी की घटनाओं में शामिल होने की बात स्वीकार की। उसने पलासिया क्षेत्र के एक हॉस्टल से लैपटॉप चोरी करने की वारदात भी कबूल की। इस मामले में पुलिस को घटनास्थल के सीसीटीवी फुटेज भी मिले हैं, जिनसे जांच को मजबूती मिली है। जांच में यह भी सामने आया कि आरोपी चोरी किए गए इलेक्ट्रॉनिक सामान के लिए बड़े प्रतिष्ठित शोरूम की तर्ज पर एआई टूल्स से फर्जी खरीद बिल तैयार करता था, ताकि सामान पूरी तरह वैध और खरीदा हुआ प्रतीत हो। इसके बाद वह इन्हें शहर के विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक बाजारों में बेच देता था।

नेटवर्क की खोज हो रही - पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 21 लैपटॉप, 4 टैबलेट, 4 मोबाइल फोन और 2 महंगी घड़ियां बरामद की हैं। जब्त किए गए सामान की अनुमानित कीमत करीब 13 लाख रुपये बताई गई है। प्रारंभिक जांच में यह भी पता चला है कि ऑनलाइन ट्रेडिंग में भारी नुकसान और बढ़ते कर्ज के चलते आरोपी ने चोरी का रास्ता चुना। अब पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि उसने अब तक कितने चोरी के सामान बेचे हैं और इस पूरे नेटवर्क में उसके साथ कोई अन्य व्यक्ति भी शामिल था या नहीं। मामले की विस्तृत जांच जारी है।

खिलौना दुकान की आड़ में ड्रग्स का धंधा

इंदौर। शहर में अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत क्राइम ब्रांच ने एमडी ड्रग्स तस्करी के मामले में लंबे समय से फरार चल रहे आरोपी आवेश कुरैशी (30) को गिरफ्तार किया। रानीपुरा निवासी आरोपी खिलौनों की दुकान संचालित करता है। अपराध में उसकी तलाश की जा रही थी। उसकी गिरफ्तारी सूचना और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर की गई। प्रकरण में पुलिस पहले ही सह-आरोपी आसिम खान को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से करीब 20.30 ग्राम एमडी ड्रग्स, जिसकी अनुमानित कीमत लगभग दो लाख रुपए, वारदात में स्कूटी जब्त कर चुकी है। जांच के दौरान सामने आए तथ्यों के आधार पर फरार आरोपी की तलाश की जा रही थी। क्राइम ब्रांच अब गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ कर यह पता लगाने में जुटी है कि उसे एमडी ड्रग्स कहां से मिलती थी, इसके पीछे कौन सप्लायर हैं और शहर में फैले तस्करी नेटवर्क से किन-किन लोगों के तार जुड़े हैं। पुलिस का कहना है कि पूछताछ के आधार पर जल्द ही अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी की भी संभावना है। क्राइम ब्रांच के अनुसार, वर्ष 2026 में अब तक एनडीपीएस एक्ट के 52 प्रकरणों में 110 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इन मामलों में करीब 2.90 करोड़ रुपए मूल्य के मादक पदार्थ और तस्करी में इस्तेमाल किए गए वाहन जब्त किए गए हैं।

छात्रा के अश्लील वीडियो वायरल, गिरफ्तार

इंदौर। राजेंद्र नगर थाना क्षेत्र में रहने वाली 20 वर्षीय लॉ छात्रा के अश्लील वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर उत्तर प्रदेश निवासी आदित्य राहुल वर्मा के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस के अनुसार करीब 1 वर्ष पहले दोनों की पहचान सोशल मीडिया के माध्यम से हुई थी। पिछले 1 महीने से आरोपी छात्रा पर मिलने का दबाव बना रहा था। आरोप है कि वीडियो कॉल के दौरान उसने छात्रा पर बिना कपड़ों के बात करने का दबाव बनाया। विरोध करने पर जान से मारने और बदनाम करने की धमकी दी तथा अलग-अलग मोबाइल नंबरों से लगातार परेशान करता रहा। पीड़िता का आरोप है कि दो दिन पहले आरोपी ने उसके अश्लील वीडियो सहेलियों और अन्य परिचितों को भेज दिए। इतना ही नहीं, छात्रा के नाम से फर्जी सोशल मीडिया आईडी बनाकर उस पर भी वीडियो अपलोड कर दिए। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ गंभीर धाराओं में मामला दर्ज कर कार्रवाई की है। साथ ही सोशल मीडिया से आपत्तिजनक सामग्री हटाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है।

जनसंपर्क कर्मी के 3 हमलावर गिरफ्तार

इंदौर। वंदना नगर क्षेत्र में जनसंपर्क विभाग के कर्मचारी और उनके परिवार के साथ मारपीट करने के मामले में एरोड्रम थाना पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। घर के सामने कचरा फेंकने को लेकर शुरू हुआ विवाद देखते ही देखते हिंसक झड़प में बदल गया था, जिसमें कर्मचारी के सिर पर डंडे से हमला किया गया था। पुलिस के अनुसार फरियादी अनिल माने, जो शासकीय जनसंपर्क विभाग में कार्यरत हैं, ने शिकायत दर्ज कराई थी कि गुरुवार सुबह करीब 6 बजे पड़ोस में रहने वाली आशा गायकवाड उनके घर के सामने कचरा फेंक रही थी। विरोध करने पर उसने गाली-गलौज शुरू कर दी। इसी दौरान उसका बेटा संदीप गायकवाड मारपीट पर उतर आया, जबकि दूसरे बेटे जगदीश गायकवाड़ ने लकड़ी के डंडे से अनिल माने के सिर पर हमला कर दिया। हमले में उनका सिर फट गया और वे लहूलुहान होकर गिर पड़े। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आशा गायकवाड़, संदीप गायकवाड, जगदीश गायकवाड को गिरफ्तार कर लिया। मामले में पुलिस आगे की कार्रवाई कर रही है।

चाकू से हमले के विरोध में थाने का घेराव

इंदौर। सदर बाजार थाना क्षेत्र के गाडराखेड़ी में आरएसएस से जुड़े कार्यकर्ता धर्मेंद्र टिकलिया पर हुए चाकू हमले को लेकर शुक्रवार को बड़ी संख्या में संघ कार्यकर्ता थाने पहुंच गए। उन्होंने पुलिस पर हल्की धाराओं में मामला दर्ज करने और आरोपी की गिरफ्तारी में देरी का आरोप लगाते हुए धरना दिया तथा हनुमान चालीसा का पाठ कर विरोध दर्ज कराया। पुलिस के अनुसार, 12 जुलाई की रात धर्मेंद्र टिकलिया अपने घर के बाहर विवाद की आवाज सुनकर पहुंचे थे। वहां ब्रह्म बाग कॉलोनी निवासी रजत मिश्रा का एक युवक से विवाद चल रहा था। बीच-बचाव करने पर आरोपी ने कथित तौर पर गाली-गलौज करते हुए चाकू निकालकर धर्मेंद्र के पेट में वार कर दिया। गंभीर रूप से घायल धर्मेंद्र को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि आरोपी मौके से फरार हो गया। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि यह स्पष्ट रूप से जानलेवा हमला है, फिर भी पुलिस ने गंभीर धाराएं नहीं लगाईं। उन्होंने आरोपी की तत्काल गिरफ्तारी और हत्या के प्रयास की धारा जोड़ने की मांग की। पुलिस अधिकारियों ने प्रदर्शनकारियों को भरोसा दिलाया कि मामले की निष्पक्ष जांच की जाएगी, उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर आवश्यक वैधानिक कार्रवाई की जाएगी तथा फरार आरोपी की जल्द गिरफ्तारी के प्रयास तेज किए गए हैं।

चलती बस से गुटखा थूकने पर गिरने से मौत

इंदौर। तेजाजी नगर थाना क्षेत्र में खंडवा रोड पर शुक्रवार को एक दर्दनाक सड़क हादसे में 32 वर्षीय युवक की जान चली गई। चलती बस के गेट पर खड़े होकर गुटखा थूकने के दौरान स्पीड ब्रेकर पर बस के उछलने से युवक का संतुलन बिगड़ गया और वह सीधे सड़क पर जा गिरा। सिर और शरीर में गंभीर चोट लगने से उसे तत्काल एमवाय अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस के अनुसार मृतक की पहचान अनिल (32) निवासी मोरटक्का के रूप में हुई है। वह इंदौर से खंडवा जाने वाली निजी बस में सफर कर रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, उमरिया के पास पहुंचने पर अनिल गुटखा थूकने के लिए बस के दरवाजे तक पहुंचा और गेट पर खड़ा हो गया। इसी दौरान बस अचानक स्पीड ब्रेकर से गुजरी, जिससे तेज झटका लगा और उसका संतुलन बिगड़ गया। वह चलती बस से सड़क पर जा गिरा। हादसे के बाद बस चालक ने तत्काल वाहन रोका। यात्रियों की मदद से गंभीर रूप से घायल अनिल को पहले प्राथमिक उपचार के लिए ले जाया गया, जहां से उसे एमवाय अस्पताल रेफर किया गया। डॉक्टरों ने उसे बचाने का प्रयास किया, लेकिन गंभीर सिर की चोटों के कारण इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

रिमझिम बरसात से शहर में मौसम खुशनुमा, जल संकट से राहत मिली

घने बादलों और रुक-रुक कर हुई वर्षा से तापमान में गिरावट

इंदौर। शुक्रवार सुबह से शहर में रुक-रुक कर हुई बारिश ने मौसम का मिजाज पूरी तरह बदल दिया। सुबह से ही आसमान पर घने बादलों का डेरा रहा और बीच-बीच में हल्की से मध्यम वर्षा होती रही। बारिश के कारण तापमान में कमी दर्ज की गई, जिससे लोगों को उमस और गर्मी से राहत मिली। मौसम विभाग ने भी संकेत दिए हैं कि अगले कुछ दिनों तक शहर और आसपास के क्षेत्रों में बादलों की आवाजाही बनी रहेगी तथा रुक-रुक कर बारिश का दौर जारी रह सकता है। बारिश का असर शहर की यातायात व्यवस्था पर भी दिखाई दिया। कई प्रमुख सड़कों पर पानी जमा होने से वाहन चालकों को सावधानी के साथ धीमी गति से सफर करना पड़ा। हालांकि, वर्षा लगातार नहीं होने के कारण दैनिक गतिविधियां सामान्य रहीं और जनजीवन पर कोई बड़ा असर नहीं पड़ा। दूसरी ओर, पार्कों, तालाबों और हरियाली वाले स्थानों पर लोगों ने सुहाने मौसम का आनंद लिया। यह राहत ऐसे समय आई है, जब कुछ ही दिन पहले इंदौर पानी की गंभीर समस्या का सामना कर रहा था। नर्मदा परियोजना से जुड़ी पाइपलाइन और जलापूर्ति व्यवस्था में आई तकनीकी गड़बड़ियों के कारण शहर के कई इलाकों में पेयजल आपूर्ति प्रभावित हो गई थी। कई कॉलोनियों में तय समय पर पानी नहीं पहुंचने से लोगों को टैंकरों और अन्य वैकल्पिक व्यवस्थाओं पर निर्भर रहना पड़ा था। नगर निगम ने मरम्मत कार्य पूरा करने के बाद जलापूर्ति को चरणबद्ध तरीके से सामान्य करना शुरू किया था। अब मानसून के सक्रिय होने और लगातार हो रही बारिश से शहर के जलाशयों में पानी की आवक बढ़ने की उम्मीद है। इससे आने वाले दिनों में पेयजल संकट की स्थिति में और सुधार होने की संभावना जताई जा रही है। मौसम विभाग का कहना है कि आगामी दिनों में भी बादलों का प्रभाव बना रहेगा और रुक-रुक कर बारिश होती रह सकती है। ऐसे में मौसम के सुहाने बने रहने के साथ-साथ शहर के जल स्रोतों को भी इसका लाभ मिलने की उम्मीद है।

17 करोड़ की संपत्ति के मामले में जांच बढ़ी सेबी, आयकर और एमपीआईडीसी सक्रिय

750% से अधिक अनुपातहीन संपत्ति, परिवार के निवेश और शेयर जांच में आए

इंदौर। विद्युत मंडल के कर्मचारी शिवराम सेमिल के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति मामले में लोकायुक्त पुलिस ने जांच का दायरा और व्यापक कर दिया है। अब लोकायुक्त ने भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) को पत्र भेजकर आरोपी के शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड और अन्य वित्तीय निवेशों का पूरा ब्योरा मांगा है। इसके साथ ही आयकर विभाग, संबंधित शासकीय विभागों और अन्य एजेंसियों से भी सेवा रिकॉर्ड एवं वित्तीय दस्तावेज तलब किए गए हैं। लोकायुक्त के डीएसपी सुनील तालान ने बताया कि अब तक की जांच में शिवराम सेमिल के पास 17 करोड़ 12 लाख रुपये से अधिक की चल-अचल संपत्ति का खुलासा हुआ है। प्रारंभिक जांच के अनुसार यह संपत्ति उनकी अनुमानित वैध आय की तुलना में करीब 750 प्रतिशत अधिक पाई गई है। फिलहाल उनकी वैध आय लगभग दो करोड़ रुपये आंकी गई है, जबकि सेवा विवरण मिलने के बाद आय और संपत्ति का अंतिम आकलन किया जाएगा जांच के दौरान लोकायुक्त टीम ग्वालियर-मुरैना स्थित आरोपी के पैतृक गांव भी पहुंची। वहां एक नवनिर्मित मकान, 40×20 फीट का भूखंड तथा करीब सवा बीघा कृषि भूमि मिलने की पुष्टि हुई है। इन संपत्तियों से जुड़े दस्तावेजों का सत्यापन कराया जा रहा है। डीएसपी तालान के अनुसार आरोपी के दामाद और उनके परिवार के नाम पर किए गए निवेशों तथा एक फैक्ट्री के संचालन से जुड़े दस्तावेज भी जब्त किए गए हैं। बैंक खातों के रिकॉर्ड और एमपीआईडीसी से प्राप्त होने वाली जानकारी के आधार पर इन निवेशों के स्रोत और आपसी संबंधों की जांच की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि दामाद के खिलाफ अलग से कोई प्रकरण दर्ज नहीं है, लेकिन परिवार के सदस्य होने के कारण उनकी भूमिका भी मुख्य जांच के दायरे में रहेगी। लोकायुक्त का कहना है कि सभी वित्तीय पहलुओं की गहन जांच के बाद आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

बंधक प्लॉट बेचकर 18.75 लाख रु ठगे, 'इंफ्रा' की डायरेक्टर पकड़ाई

क्राइम ब्रांच रिमांड पर लेकर खंगाल रही अन्य सौदों का रिकॉर्ड

इंदौर। रियल एस्टेट के नाम पर लाखों रुपये की धोखाधड़ी के मामले में क्राइम ब्रांच ने कार्रवाई करते हुए एक निजी इंफ्रा कंपनी की डायरेक्टर को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि विकास अनुमति के लिए शासन के पास पहले से बंधक रखे गए प्लॉट के फर्जी दस्तावेज तैयार कर महिला से 18.75 लाख रुपये की ठगी की गई। पुलिस को आशंका है कि इसी तरह कई अन्य लोगों के साथ भी धोखाधड़ी की गई हो सकती है। क्राइम ब्रांच के अनुसार, फरियादी वनिता डांगी ने शिकायत दर्ज कराई थी कि रियलिटी यूनाइटेड इंफ्रा प्राइवेट लिमिटेड की डायरेक्टर अनीता गहलोत ने ऑर्चिड पार्क कॉलोनी में कम कीमत पर प्लॉट दिलाने का झांसा दिया। जांच में सामने आया कि संबंधित प्लॉट विकास अनुमति के लिए पहले से ही शासन के पास बंधक था, लेकिन यह तथ्य छिपाकर प्लॉट क्रमांक जे-16 का विक्रय अनुबंध तैयार किया गया और फरियादी से 18 लाख 75 हजार रुपये वसूल लिए गए। शिकायत की जांच के बाद क्राइम ब्रांच ने अपराध दर्ज किया। इसके बाद आरोपी अनीता गहलोत, निवासी ग्राम शाहपुरा (वर्तमान पता प्लैटिनम पैराडाइज टावर, बाईपास, इंदौर) को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने आरोपी को न्यायालय से रिमांड पर लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। क्राइम ब्रांच अब कंपनी के दस्तावेज, बंधक प्लॉटों का रिकॉर्ड और अन्य निवेशकों से जुड़े लेन-देन की जांच कर रही है। अधिकारियों का मानना है कि पूछताछ में रियल एस्टेट से जुड़े अन्य फर्जीवाड़ों का भी खुलासा हो सकता है। यदि किसी अन्य व्यक्ति से भी इसी तरह ठगी हुई है, तो उसे सामने आने की अपील भी की जा सकती है।

'संबल योजना' की राशि मंजूरी के नाम पर 5 हजार रिश्वत लेते पकड़ा

लोकायुक्त ने बिछाया जाल, 20 हजार की मांग, 15 में सौदा

इंदौर। भ्रष्टाचार के खिलाफ लोकायुक्त पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है। गुरुवार को लोकायुक्त इंदौर की टीम ने नगर निगम की एक वार्ड प्रभारी को संबल योजना की राशि स्वीकृत कराने के बदले रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया। कार्रवाई भंवरकुआं क्षेत्र स्थित डीडी गार्डन के पीछे की गली में की गई। लोकायुक्त के अनुसार, राम मंदिर के पास लिंबोड़ी निवासी 22 वर्षीय आशीष चौधरी ने 17 जुलाई को शिकायत दर्ज कराई थी।

शिकायत में बताया गया कि उनके पिता के निधन के बाद संबल योजना के तहत मिलने वाली 2 लाख रुपए की सहायता राशि मंजूर कराने के लिए नगर निगम के जॉन-13 की वार्ड प्रभारी संध्या पथ रोड और उनके सहायक हरभजन सिंह सलूजा 20 हजार रुपए रिश्वत मांग रहे थे। शिकायत का सत्यापन कराया गया, जिसमें रिश्वत की मांग सही पाई गई। सत्यापन के दौरान आरोपियों ने 15 हजार रुपए तीन किस्तों में लेने पर सहमति जताई। इसके बाद लोकायुक्त पुलिस अधीक्षक राजेश सहाय के निर्देशन और निरीक्षक प्रतिभा तोमर के नेतृत्व में ट्रैप टीम गठित की गई। गुरुवार को शिकायतकर्ता से पहली किस्त के रूप में 5 हजार रुपए लेते ही वार्ड प्रभारी संध्या पथरोड को रंगे हाथ पकड़ लिया गया। मौके से रिश्वत की राशि भी जब्त कर ली गई। सहायक हरभजन सिंह सलूजा की भूमिका की भी जांच की जा रही है। लोकायुक्त ने दोनों आरोपियों के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 (संशोधित 2018) की धारा 7 तथा बीएनएस की धारा 61(2) के तहत मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।कार्रवाई महानिदेशक लोकायुक्त योगेश देशमुख के निर्देश, उप पुलिस महानिरीक्षक मनोज सिंह के मार्गदर्शन तथा पुलिस अधीक्षक राजेश सहाय की निगरानी में निरीक्षक प्रतिभा तोमर और उनकी टीम ने अंजाम दी।

मनी लॉन्ड्रिंग जांच में तीन गिरफ्तार, इंदौर, मंदसौर में तलाशी, सुराग मिले

70 करोड़ की एमडी ड्रग तस्करी मामले में ईडी की कार्रवाई

इंदौर। लगभग 70 करोड़ रुपये मूल्य की मेफेड्रोन (एमडी) ड्रग तस्करी और उससे जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बड़ी कार्रवाई करते हुए 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इंदौर उप-क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत की जा रही जांच के दौरान 21 जुलाई 2026 को वेद प्रकाश व्यास, दिनेश अग्रवाल और अक्षय अग्रवाल को गिरफ्तार किया गया। ईडी की यह जांच अपराध शाखा इंदौर द्वारा नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सबस्टेंस (एनडीपीएस) अधिनियम, 1985 के तहत दर्ज एफआईआर के आधार पर शुरू हुई थी।

मामला लगभग 70 किलोग्राम मेफेड्रोन (एमडी) के अवैध कब्जे और तस्करी से जुड़ा है, जिसकी अनुमानित अंतरराष्ट्रीय कीमत करीब 70 करोड़ रुपये आंकी गई है। जांच के दौरान ईडी को ऐसे तथ्य मिले हैं जिनसे संकेत मिलता है कि आरोपियों ने मादक पदार्थों की अवैध तस्करी से प्राप्त धन को विभिन्न व्यक्तिगत और व्यावसायिक बैंक खातों के माध्यम से वित्तीय लेनदेन में इस्तेमाल किया। वित्तीय पड़ताल में बड़े पैमाने पर नकद लेनदेन, धन के प्लेसमेंट, लेयरिंग तथा अपराध से अर्जित आय को छिपाने की कोशिशों के प्रमाण सामने आए हैं। ईडी के अनुसार जांच के दौरान दर्ज किए गए बयानों से यह भी संकेत मिले हैं कि आरोपी अपनी नियमित कारोबारी गतिविधियों के साथ-साथ मादक पदार्थों की आपूर्ति और तस्करी के नेटवर्क से भी जुड़े हुए थे। इन तथ्यों के आधार पर एजेंसी ने जांच का दायरा और बढ़ाया है। इस मामले में ईडी ने 17 जुलाई को इंदौर और मंदसौर स्थित कई परिसरों पर एक साथ तलाशी अभियान चलाया था। कार्रवाई के दौरान आरोपियों की संपत्तियों, वित्तीय लेनदेन और व्यावसायिक गतिविधियों से जुड़े कई आपत्तिजनक दस्तावेज, डिजिटल उपकरण तथा अन्य महत्वपूर्ण साक्ष्य जब्त किए गए, जिनकी जांच की जा रही है।

ईडी का कहना है कि मादक पदार्थों के खिलाफ प्रभावी लड़ाई केवल ड्रग्स की बरामदगी तक सीमित नहीं रह सकती। इसके लिए उन आर्थिक नेटवर्क को भी समाप्त करना आवश्यक है, जिनके माध्यम से अवैध कारोबार संचालित होता है। एजेंसी ने स्पष्ट किया है कि धन शोधन निवारण अधिनियम के तहत मादक पदार्थों की तस्करी से अर्जित अपराध की आय की पहचान, उसका पता लगाने और उसे जब्त करने की कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। ईडी ने यह भी कहा कि देश को नशा मुक्त बनाने के लक्ष्य की पूर्ति के लिए कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ-साथ आम नागरिकों की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है, ताकि युवाओं को मादक पदार्थों के बढ़ते खतरे से बचाया जा सके। मामले में आगे की जांच जारी है।

डेयरियों पर खाद्य सुरक्षा विभाग की सख्ती, बिना पंजीयन वाली दुकानों पर मामले दर्ज

राऊ क्षेत्र में 3 डेयरियों का निरीक्षण, 8 खाद्य नमूने जांच के लिए भोपाल भेजे

इंदौर। दूध और दुग्ध उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रदेशभर में चलाए जा रहे विशेष निरीक्षण अभियान के तहत गुरुवार को खाद्य सुरक्षा प्रशासन की टीम ने राऊ क्षेत्र की डेयरियों पर सघन जांच अभियान चलाया। एक डेयरी के खिलाफ खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के तहत वैधानिक कार्रवाई शुरू की गई। विभिन्न प्रतिष्ठानों से दूध, पनीर, घी और दही सहित कुल 8 खाद्य नमूने जांच के लिए एकत्र कर राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला, भोपाल भेजे गए हैं। आयुक्त, खाद्य सुरक्षा मध्यप्रदेश एवं नियंत्रक, खाद्य एवं औषधि प्रशासन के निर्देश पर चल रहे इस अभियान में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने राऊ क्षेत्र के डेयरी प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मोबाइल फूड टेस्टिंग लैब की सहायता से मौके पर खाद्य पदार्थों की प्रारंभिक जांच भी की गई और कारोबारियों तथा आम नागरिकों को खाद्य सुरक्षा संबंधी जानकारी दी गई। अभियान के दौरान कुल 3 डेयरी प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया गया और 8 खाद्य नमूने जांच के लिए राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला, भोपाल भेजे गए हैं। परीक्षण रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद संबंधित प्रतिष्ठानों के विरुद्ध खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के तहत आवश्यक वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। रंगवासा रोड स्थित पाटीदार दूध डेयरी के निरीक्षण के दौरान यह पाया गया कि प्रतिष्ठान के पास वैध खाद्य पंजीयन नहीं है। यह खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के प्रावधानों का उल्लंघन माना गया। मौके पर विक्रेता सुरेश पाटीदार मौजूद मिले। यहां से मिश्रित दूध और पनीर के 2 नमूने जांच के लिए लिए गए। विभाग ने बिना पंजीयन खाद्य कारोबार संचालित किए जाने के मामले में नियमानुसार कार्रवाई प्रारंभ कर दी है। महाशक्ति नगर स्थित अवंतिका दूध डेयरी स्वीट्स एंड नमकीन का भी निरीक्षण किया गया। यहां प्रभारी गणेश पुरोहित उपस्थित मिले। जांच के दौरान परिसर में दही, पनीर, घी, मिठाई और नमकीन का निर्माण एवं विक्रय होता पाया गया। विभागीय टीम ने यहां से दूध, घी और पनीर के 3 नमूने परीक्षण के लिए एकत्र किए। इसी अभियान के तहत सतगुरु मिल्क प्वाइंट का भी निरीक्षण किया गया। प्रतिष्ठान के संचालक विकास चौधरी की मौजूदगी में गाय के दूध, पनीर और दही के 3 नमूने जांच के लिए लिए गए। निरीक्षण के दौरान मोबाइल फूड टेस्टिंग लैब के माध्यम से खाद्य पदार्थों की स्पॉट टेस्टिंग की गई।

संपादकीय

विधानसभा का सिकुड़ता सत्र

वो जमाना गया, जब विधानसभा सत्र का खास महत्व, गरिमा और गंभीरता हुआ करती थी। न केवल विधानसभा सदस्य इसको लेकर संजीदा हुआ करते थे, बल्कि मीडिया भी उसे उतनी ही गंभीरता और विस्तार से कवर करता था। लेकिन अब हालात पूरी तरह से बदल गए हैं। इस बार भी मप्र विधानसभा का मानसून सत्र पांच दिन का ही था, लेकिन वह भी तीन दिन में निपट गया। हंगामे के बीच सदन ने अनुपूरक बजट सहित कुल 15 विधेयक पारित किए, जिनमे मुख्य रूप से राज्य में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने तथा मेडिकल यूनिवर्सिटी को दो भागों में बांटना शामिल है। अखिरी दिन नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय द्वारा दिल्ली में आंदोलन कर रहे छात्रों को कीड़ा कहने पर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच भारी नोंक-झोंक हुई। हालांकि बाद में विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने स्पष्ट किया कि कैलाश विजयवर्गीय ने छात्रों को लेकर ऐसे किसी शब्द का उपयोग नहीं किया था। बुधवार को अनुपूरक बजट पर देर रात चली चर्चा के बाद अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने सदन को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया। आखिरी दिन ही 5 पांच संशोधन विधेयक पारित कर दिए गए। जो अन्य महत्वपूर्ण बिल पारित हुए, उनमें भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता संशोधन विधेयक, मध्यप्रदेश निजी विश्वविद्यालय स्थापना एवं संचालन संशोधन विधेयक, मध्यप्रदेश राज एवं ग्राम स्वराज संशोधन विधेयक, मध्यप्रदेश माल और सेवा कर संशोधन विधेयक और मध्यप्रदेश निरसन विधेयक 2026 शामिल हैं। इस सत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धि राज्य में यूसीसी बिल का पास होना है। यह संविधान की भावना के अनुसार और भाजपा के राजनीतिक एजेंडे को सूट करने वाला है। विधानसभा में प्रदेश में शिक्षकों की ई-अटेंडेंस का मुदद‌ा भी सदन में गूंजा। मंत्री विश्वास सारंग ने स्पष्ट किया कि प्रदेश में 95.5 फीसदी टीचर ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं और जहां भी नेटवर्क की समस्या है, इसके लिए प्रदेश भर से जानकारी बुलाई जा रही है। विस में यूसीसी बिल भी भारी हंगामे के बीच ध्वनि मत से पारित हुआ। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि आज विधानसभा में स्वर्णिम इतिहास लिखा जा रहा है, क्योंकि इस विधेयक के कानून बन जाने के बाद तीन तलाक या हलाला से जुड़े मामले अपराध की श्रेणी में आएंगे, एक से अधिक शादी पर रोक लगेगी, शादी और तलाक दोनों का पंजीयन अनिवार्य होगा तथा विवाहित या अविवाहित माता-पिता के जैविक या उनके द्वारा गोद लिए जाने समेत सभी प्रकार के बच्चों को उत्तराधिकार में समान कानूनी दर्जा मिलेगा। उन्होंने कांग्रेस पर इस विधेयक का विरोध करने का आरोप लगाते हुए कहा कि सिर्फ मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए वह ऐसा कर रही है। यादव ने कांग्रेस को आदिवासी विरोधी भी करार दिया और कहा कि इस विधेयक के दायरे से आदिवासी समाज को बाहर रखा गया है। हालांकि नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने बिल का विरोध करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में अभी समान नागरिक संहिता की कोई जरूरत नहीं है। इसी सत्र के अंतिम दिन सबसे अधिक चर्चा रानी दुर्गावती आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय को लेकर हुई। कांग्रेस ने मेडिकल विश्वविद्यालयों के विस्तार और चिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता पर सवाल उठाते हुए सरकार से स्पष्ट जवाब मांगा। कांग्रेस विधायक लखन घनघोरिया ने इसे जबलपुर और महाकौशल क्षेत्र की उपेक्षा तथा मेडिकल विशेषज्ञों का अपमान बताया। जबकि भाजपा विधायकों ने उज्जैन में दूसरी मेडिकल यूनिवर्सिटी खोलने का समर्थन किया। अंतिम दिन सदन ने वित्तीय वर्ष 2026-27 का 7,765.06 करोड़ रुपये का पहला अनुपूरक बजट चर्चा के बाद पारित कर दिया। विधानसभा सत्र छोटा होने का औचित्य बताते हुए मुख्यरमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि छोटा सत्र होने का अर्थ यह नहीं कि काम कम हुआ है। उन्होंने इसकी तुलना हनुमानजी की लंबी छलांग से की।

नजरिया

अरविन्द मोहन
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अगले कुछ दिन नाजुक और महत्वपूर्ण

जब सुप्रीमकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने सामाजिक कार्यकर्ताओं और एक्टिविस्ट पत्रकारों के लिए 'काकरोच' शब्द का इस्तेमाल किया तो एक नया बवाल शुरू हुआ। विदेश में रहने वाले कुछ नौजवानों ने ऑनलाइन 'काकरोच जनता पार्टी' बना डाली जिसके 'फालोवर' लाखों में सामने आए। उसका नेता अभिजीत दीपके हिंदुस्तान आया और जंतर-मंतर पर प्रदर्शन करने पहुंचा तो सरकार ने उसे हवाई अड्डे पर रिसीव करने से लेकर जंतर-मंतर पर बैठाने का इंतजाम किया। उसी ने धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे को मुद्दा बनाया जो धीरे-धीरे जोर पकड़ता गया। सोनम वांगचुक जैसे नामी आदमी और दिल्ली के विश्वविद्यालयों के कई छात्रों द्वारा अनशन शुरू करने पर यह जोर पकड़ता गया। बीस जुलाई को संसद का मानसून सत्र शुरू होने पर संसद तक जाने के आह्वान ने आंदोलन का नया ही स्वरूप बना दिया।

शिक्षामंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर चल रहा छात्रों-नौजवानों का आंदोलन अब एक नए दौर में पहुँच गया है। 'नीट' ('नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टैस्ट,' 'राष्ट्रीय पात्रता व प्रवेश परीक्षा') परीक्षा के सवाल लीक होने पर कम बवाल नहीं मचा था। आखिर इस सरकार के कामकाज के दौरान नब्बे परचे लीक हुए और फिर भी न लीक कराने वाली प्राइवेट एजेंसी के खिलाफ कोई कार्रवाई हो रही है न मंत्री जी की सेहत पर कोई फरक पड़ता है।

जब सुप्रीमकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने सामाजिक कार्यकर्ताओं और एक्टिविस्ट पत्रकारों के लिए 'काकरोच' शब्द का इस्तेमाल किया तो एक नया बवाल शुरू हुआ। विदेश में रहने वाले कुछ नौजवानों ने ऑनलाइन 'काकरोच जनता पार्टी' बना डाली जिसके 'फालोवर' लाखों में सामने आए। उसका नेता अभिजीत दीपके हिंदुस्तान आया और जंतर-मंतर पर प्रदर्शन करने पहुंचा तो सरकार ने उसे हवाई अड्डे पर रिसीव करने से लेकर जंतर-मंतर पर बैठाने का इंतजाम किया। उसी ने धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे को मुद्दा बनाया जो धीरे-धीरे जोर पकड़ता गया। सोनम वांगचुक जैसे नामी आदमी और दिल्ली के विश्वविद्यालयों के कई छात्रों द्वारा अनशन शुरू करने पर यह जोर पकड़ता गया। बीस जुलाई को संसद का मानसून सत्र शुरू होने पर संसद तक जाने के आह्वान ने आंदोलन का नया ही स्वरूप बना दिया।

पहले जो कुछ हो रहा था उससे सरकार अनजान नहीं थी और सोनम वांगचुक जैसों से बातचीत का प्रयास करके तनाव कम कर सकती थी। उसने ऐसा क्यों नहीं किया, यह जबाव वही देगी, लेकिन उस दिन जब हर तरफ से नौजवानों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं का रेला उमड़ने लगा तब उसकी नींद खुली। दस हजार से ज्यादा वर्दी वाले जवान और काफी संख्या में बिना वर्दी वालों को लगाकर भीड़ को रोकने और संसद की तरफ बढ़ रहे प्रदर्शनकारियों को रोकने की कोशिश हुई। इसमें लाठी चार्ज और आँसु-गैस छोड़ने का प्रयोग हुआ। कई जगह लड़कों से भिड़ंत हुई। कई सिर फूटे, हाथ पैर टूटे।

सरकार ने जेपी नड्डा से आंदोलनकारियों के प्रतिनिधि की बात कराई, लेकिन तब तक काफी कुछ बदल गया था। एक तो आंदोलन 'काकरोच जनता पार्टी' भर का नहीं रहा। इसमें स्वतः स्फूर्त ढंग से काफी बड़ी संख्या में नौजवान और छात्र शामिल हुए। दूसरे, लगभग पूरा विपक्ष एकजुट होकर आंदोलन के पक्ष में आ गया, 'एनडीए' से जुड़े कुछ लोग भी सरकारी रवैये को लेकर नाखुश दिखे। आंदोलन देश के दर्जनों शहरों में फ़ैल गया। जगह-जगह प्रदर्शन और गिरफ्तारियों की खबर आई। दिल्ली में भी रोक-टोक के बावजूद हाल के वर्षों की सबसे बड़ी भीड़ जुटी- 'अन्ना आंदोलन' वाले दौर से भी ज्यादा बड़ी।

अगर यह सवाल शिक्षामंत्री के इस्तीफे तक रहता है तो उसके होने, न होने को हम सरकार या आंदोलनकारियों की जीत या हार के रूप में देख सकते हैं। बीस जुलाई को सरकार और पुलिस की तरफ से यह जताया गया कि अब आंदोलनकारी जंतर-मंतर से उठ गए हैं, उनका मंच हटा दिया गया है, लेकिन आंदोलनकारी रात भर बैठे रहे और सोनम वांगचुक ने भी अस्पताल से ही अपना अनशन जारी रखने का ऐलान किया।

दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'एनडीए' सांसदों से मंगलवार वाली मुलाकात को 'मंगल मिलन' नाम देते हुए बैठक की और परचा लीक मामले में पहली बार स्पष्ट घोषणा की। हालांकि उनके कहने में धर्मेन्द्र प्रधान को जिम्मेवार मानने जैसा कोई मसला न था, लेकिन उनका इतना बोलना और 20 जुलाई की सरकारी तैयारी बताती है कि वे अब इस आंदोलन को लेकर गंभीर हैं या आशंकित हैं। बिना वर्दी वाले लठैत उतारने के साथ बिना नेमप्लेट और बैच वाले जवानों को बच्चे-बच्चियों से निपटने की ड्यूटी लगाने का फैसला यूं ही नहीं लिया गया है। चाहे 'कृषि बिल' पर किसानों का आंदोलन हो या महिला पहलवानों के मामले पर चला आंदोलन, सरकार जब अपने पर उतरती है तो क्या करती है या कर सकती है यह देश ने देखा है।

हर बार हर मामले को एक ही डंडे से हांकना लोकतांत्रिक राजनीति के हिसाब से न उचित है, न संभव। अगर सरकार ने पहलवान मामले में अपनी चलाई तो किसान मामले में उसे झुकना पड़ा। इस बार आंदोलन जिस नाजुक मोड पर है उसमें उसके बिखरने और जोर पकड़ने जैसी दोनों स्थिति संभव लगती है। एक तो कोई व्यवस्थित संगठन और विचारधारा न होने से 'काकरोच जनता पार्टी' देशव्यापी आंदोलन चलाकर भाजपा, 'एनडीए' और संघ को चुनौती दे सकती है, यह अभी संभव नहीं लगता। दूसरे अभी तक के काम में ही उसने विपक्ष की मदद ली हो, साथ आये लड़के-लड़कियों को मन से अपनाया हो, ऐसा नहीं लगता।

बीस दिन के अनशन वाले दौर में भी मंच वालों और नीचे वालों के बीच का फांक कोई भी देख सकता था। पर मान-अपमान की परवाह किए बगैर 'आईसा' और वामपंथी छात्र संगठन जमे रहे तभी आंदोलन ने कोई स्वरूप लिया। फिर तो दिल्ली में सरकार विरोध का हर अवसर ढूँढने वाले लोगों और विपक्षी सांसदों के जमा होने में वक्त नहीं लगा। उनकी मंशा और काम पर शक करने की जरूरत नहीं है, लेकिन वे कोई बड़ा जनआंदोलन खड़ा कर लेंगे इसमें शक जरूर है। एक तरफ आंदोलन को मिला जबरदस्त समर्थन है तो दूसरी ओर सरकारी पक्ष की तरफ से अब तक हुई गलतियां भी आंदोलन को बल दे रही हैं। जिस तरह अहिंसक बच्चों के साथ हिंसा हुई, बिना वर्दी के सिपाहियों या गुंडों द्वारा मारपीट और हिंसा की गई, भूख हड़ताल को पुलिस और सफेद परदे का सहारा लेकर सोनम वांगचुक का अनशन समाप्त करने का प्रयास किया गया वह आंदोलन के जुनून को दबा नहीं सकता। इसकी बड़ी वजह वह कारण है जिसके लिए आंदोलन शुरू हुआ है।

बच्चों के भविष्य के साथ होने वाले खिलवाड़ के सामने आने पर भी सरकार जो कुछ कर रही है उससे बड़े से बड़ा मोदी भक्त परिवार भी दुखी है। हमने जनआंदोलनों की हवा के जोर पकड़ने और फिसलने का उदाहरण भी देखा है। अक्सर सरकार की गलतियां आग में घी डालने का काम करती हैं। दूसरी तरफ आपसी फूट, नेतृत्व की होड, राजनैतिक लाभ लेने की कोशिश और वैचारिक शून्यता ऐसे कारण होते हैं जो अच्छे-भले आंदोलन की हवा निकाल देते हैं। इसलिए अगले कुछ दिन बहुत नाजुक और महत्वपूर्ण हैं। शतरंज बिछ गया है। कौन पक्ष अपने पाँसे ठीक चलता है, कौन गलती करता है इस पर काफी कुछ दांव पर लगा है। (सप्रेस)

विजय बहादुर सिंह
लेखक वरिष्ठ आलोचक एवं साहित्यकार हैं।

यह देश आखिर है किसका?

फिर तो लम्बे अरसे तक इन्द्र ही सबका माई-बाप रहा। उसने हर संकट में उनकी रक्षा की। उसके शासन-काल में जिस जिस ने जब कभी सिर उठाने की कोशिश की इन्द्र ने अपने पौरुष-बल से सबको ठिकाने लगा दिया। एक समय वह भी आया जब लोग सोचना और सपने देखना तक भूल गए और इन्द्र की मरजी ही उनके जीवन की परिभाषा और पर्याय बन गई। यही समय था जब कृष्ण आए। कृष्ण ने जन्म तो लिया था इन्द्र की ही शासन-व्यवस्था में और जगह-जगह कई और छोटे-छोटे इन्द्र जरासंघ और कंस की तरह राज कर रहे थे। न केवल राज कर रहे थे बल्कि उनकी मनमर्जी ही लोक का संविधान बन चुकी थी। ऐसे शासकों के राज में सवाल उठाना, सत्ता राजनीति के चरित्र को नए सिरे से परिभाषित करना, जीवन की नई मर्यादाओं को रचना और राजसत्ता के स्थान पर लोकसत्ता को वरीयता देना, न केवल वरीयता देना अपितु उसके वर्चस्व को किसी भी मानव-समाज के लिए गौरवपूर्ण घोषित करना, कृष्ण का ऐसा ऐतिहासिक और युगान्तकारी पौरूष और योगदान था, भारत के लोग जिसे आज तक भूल नहीं पाए हैं।

क्या यह देश राम, कृष्ण, बुद्ध और गाँधी, अम्बेडकर का नहीं रहा? क्या अब यह रावण, कंस और जरासंघों का देश है? सत्य के उपासक राजा हरिश्चंद्र न्याय के उपासक विक्रमादित्य का करूणा और दया के उपासक धर्मदूत अशोक और स्वर्णयुगवाले चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यों का नहीं रहा? पुरानी स्मृतियों के पास जाकर पूछता हूँ तो वे बताती हैं कि पहले तो यह देश वरुण का था पर वो अक्षम दिखने लगा तो लोगों ने उसकी जगह इन्द्र को अपना शासक चुन लिया। फिर तो लम्बे अरसे तक इन्द्र ही सबका माई-बाप रहा। उसने हर संकट में उनकी रक्षा की। उसके शासन-काल में जिस जिस ने जब कभी सिर उठाने की कोशिश की इन्द्र ने अपने पौरुष-बल से सबको ठिकाने लगा दिया। एक समय वह भी आया जब लोग सोचना और सपने देखना तक भूल गए और इन्द्र की मरजी ही उनके जीवन की परिभाषा और पर्याय बन गई। यही समय था जब कृष्ण आए। कृष्ण ने जन्म तो लिया था इन्द्र की ही शासन-व्यवस्था में और जगह-जगह कई और छोटे-छोटे इन्द्र जरासंध और कंस की तरह राज कर रहे थे। न केवल राज कर रहे थे बल्कि उनकी मनमर्जी ही लोक का संविधान बन चुकी थी। ऐसे शासकों के राज में सवाल उठाना, सत्ता राजनीति के चरित्र को नए सिरे से परिभाषित करना, जीवन की नई मर्यादाओं को रचना और राजसत्ता के स्थान पर लोकसत्ता को वरीयता देना, न केवल वरीयता देना अपितु उसके वर्चस्व को किसी भी मानव-समाज के लिए गौरवपूर्ण घोषित करना, कृष्ण का ऐसा ऐतिहासिक और युगान्तकारी पौरूष और योगदान था, भारत के लोग जिसे आज तक भूल नहीं पाए हैं। कृष्ण थे ही ऐसे कि उनमें अन्याय-विरोध की जैसी प्रबल चेतना था, जीवन को उल्लासमय और रंजनकारी बनाने का वैसा ही उत्कट जीवनाचार भी था। पौरुष उनमें भी इन्द्र से कोई कम नहीं था पर वे इन्द्र जैसे आत्मवादी और व्यक्तिवादी नहीं थे।

इन्द्र को अपने निरंकुश भोग के समक्ष किसी अन्य का भोग या तप न तो सुहाता था और न बर्दाश्त था। और मुगालता तो ऐसा जैसे वही इस धरती का परमपिता हो। जबकि उसे कभी ऐसा नहीं ही माना गया। समाज और ऋषियों ने उसे अपना शासक तो स्वीकारा पर ब्रह्म या प्रजापिता का ऊँचा आसन कभी नहीं दिया। पर जैसा उसका दम्भी स्वभाव था, वह उस ऊँचाई की कामना कभी कर ही नहीं पाया कि लोक उसे प्रभु समान मानने लगें। कह सकते हैं उसमें यह संभावना थी ही नहीं। उसके पौरूष की यात्रा युद्ध-विजय से शुरू होकर ऐश्वर्य और भोग-विलास पूर्ण जीवन तक सिमटी हुई थी। हाँ, पर दूसरे किसी का वैसा ही अभ्युदय उसे कभी स्वीकार नहीं हुआ। यही उसकी क्षुद्र सीमा थी। कृष्ण इससे बिल्कुल अलग व्यक्तित्व लेकर आए थे। सत्ता-राजनीति तो वे भी करते ही थे। पर इकलौते राज-पुरुष की तरह नहीं, लोक के नायक बनकर, लोक के पिय्र पुरुष की तरह। इन्द्र को अपने अलावा किसी अन्य की मर्जी मर्जी तो कम दंडनीय अपराध कहीं अधिक लगा करती थी। कृष्ण का सौन्दर्य यह कि लोक की आशा-अभिलाषा ही उन्हें अपनी आशा-अभिलाषा लगा करती थी। अकारण नहीं, लोक ने उन्हें सामान्य शासक के पद से उठाकर ईश्वरीय महिमा से विभूषित कर अपने विशिष्ट अवतार के रूप में स्वीकार कर लिया। रामायण-काल की तो नहीं कह सकता किन्तु महाभारत काल में इन्द्र की उपस्थिति तो अर्जुन की पूज्य माँ कुन्ती और उनके प्रिय पति महाराज पाण्डु के ही जीवन-काल से शुरू हो गई थी। महारानी कुन्ती के जीवन में इन्द्र जिस तरह आता है और बाद के दिनों में अर्जुन को जिस तरह समर्थ करता है उससे यह अंदाज तो लगता ही है कि उसकी सोच का दायरा कहाँ तक है। क्या वह व्यक्तिगत हित-लाभ, मोह, दम्भ और स्वार्थ की सीमाओं का अतिक्रमण कर पाती है? उत्तर अंततः यही कि उसके लिए अपनी स्वार्थ-सिद्धि, जय-पराजय ही सबसे बड़ी जीवन-सिद्धि और सफलता रही है। इसके लिए वो कहाँ तक जा सकता है, इसका उदाहरण कर्ण जैसे नैतिक और महिमाशाली दानी योद्धा से छद्म बाह्मण-वेश धारण कर उसके जीवन-रक्षक कवच और कुंडल तक की मांग है। उसकी राजनीति इन्हीं छद्मों और कूटनीतियों की है। अभिमान और अहंकार की तो है ही। झूठ, कपट और छल उसका बुनियादी चरित्र था। तब यह समाज ऐसी राजनीति और राजनेता से कैसे नहीं तंग और त्रस्त होता। फिर ऐसा अतिवादी भोगाचार जो हिंसा और अनियंत्रित भोग को ही लोक की संस्कृति और सभ्यता का कसौटी मान ले? आज जब इस देश के ऐतिहासिक लोक-विवेक पर सोचता हूँ तो चकित तो उठता हूँ कि इन्द्र के जीवनकाल में तो उसे ईश्वरीय महिमा मिली ही नहीं, बाद के कालां में भी नहीं मिल पाई। जबकि राम और कृष्ण यहाँ तक कि बुद्ध तक को अवतारी पुरुष माना गया पर इन्द्र को नहीं। इन्द्र तो इस सोच के दरवाजे तक भी फटक नहीं पाया।

राम और कृष्ण या बुद्ध की तरह कर्मपरक वर्ण-व्यवस्था के आधार पर इन्द्र को भी वैसे क्षत्रियों में ही माना गया है पर पूजा तो इन्हीं तीनों की होती है। इन्हीं को याद भी किया जाता है। इन्हीं के गुण गाए जाते हैं। इनमें से बुद्ध तो सत्ता-त्यागी भी थे। पर इन तीनों को पहचान इनकी सत्ता के चलते नहीं, इस देश के उदात्त सपनों और अतिमानवीय आचारों के चलते हैं। सत्ताओं का क्या, वे तो आती-जाती रहती हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com
'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रभुनाथ शुक्ल
लेखक पत्रकार हैं।

साधो, सब मिल करिए 'लीक' पर चिंतन

बरसात का मौसम आते ही हमें लीक की चिंता सताने लगती है। गर्मी और कड़ाके की ठंड आराम से बीत जाती है, लेकिन मानसून की दस्तक की धमक हमारे कलेजे में धमका करती है। क्योंकि हमारे घर की क्षत लीक करती है। यह हमारी पुरानी कब्ज से भी बड़ी बीमारी है। हमने लीक बंद करने का अथक प्रयास किया लेकिन लीक है कि बंद होती ही नहीं।

देश में लीक की समस्या से जूझने वालों की संख्या बढ़ती जा रहीं है। इस समय लीक की समस्या से सबसे अधिक हमारा युवा परेशान है। हत्तों से वह जंतर-मंतर पर इस समस्या से जूझ रहा है। एक तो लीक दूसरे लाठी भी खा रहा है। लीक को रोकने के लिए सब अपना-अपना अनुभव एक दूसरे से शेयर करते हैं। लेकिन उसका फायदा किसी को कुछ होता नहीं दिखता है। बस एक दूसरे की लीक कथा सुनकर लोग अपनी व्यथा पर मरहम लगाते हैं। वैसे भी बारिश का मौसम है बारिश में लीक की समस्या कुछ अधिक बढ़ जाती है।

हमारे देश में लीक की बीमारी महामारी का रूप ले रहीं है। लीक को रोकने के लिए सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर सामूहिक प्रयास जारी हैं बावजूद लीक का मामला लीकबाजों की वजह से बढ़ता जा रहा है। घर की छत से शुरू हुई लीक की समस्या अब सार्वभौमिक और सामाजिक हो चली है। हमारे यहाँ लीक की समस्या अब मौसमी नहीं सदाबहारी यानी बारहमासा हो चली है। कभी किसी के घर की छत में लीक है तो किसी की पानी की टंकी में लीक है। किसी की पाईप में लीक तो किसी की दिवाल से पानी की लीक। कहीं दस्तावेज लीक हो रहे हैं तो कहीं गोपनीयता लीक हो रहीं है।

फिलहाल लीक थमने का नाम नहीं ले रहीं है। अब देखिए, कहीं घोटाले लीक हो रहे हैं तो कहीं घपले। कहीं दिल में लीक है तो कहीं दल में। कहीं बात लीक हो रहीं तो कहीं व्यवहार लीक हो रहा। पूरा का पूरा सिस्टम ही लीक है। आजकल गर्मी और हिटवेब बढ़ने की वजह भी आसमान में लीक यानी छेद होना बताया जाता है।

अब एक नई समस्या पैदा हो गई है पेपर यानी परीक्षा लीक की। अटक से लेकर कटक और कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक लीक ही लीक है। लिहाजा हालात कुछ ऐसे बिगड़े हैं कि पूछिए न कोई लीक की समस्या कम करना चाहता है तो कोई लीक को मेनहोल बनाने पर तुला है। जिसकी वजह से लीक की समस्या बढ़ती जा रहीं है। प्रतियोगी परीक्षा में तो आए दिन पेपर लीक की समस्या से छात्र और अभिभावक जूझ रहे हैं। थोड़ी -थोड़ी पेपर लीक की समस्या अब बड़ी हो गई है। जिसे रोकने के लिए जंतर-मंतर पर लोग डटे हैं।अब देखिए, लीक रूकती है या और बड़ी होती है।

हमारे यहाँ कभी वह दौर भी था जब बड़े -बड़े घपले और घोटाले लीक होते थे, अब वह दौर थोड़ा कम हुआ है लेकिन लीक का काम एकदम बंद नहीं हुआ है। एक दौर वह भी था जब छत से अधिक सरकारी आफिस की फ़ाइल लीक होती थीं, लेकिन जबसे डिजिटल जमाना आया है तब से लीक की घटनाओं पर थोड़ा रोक लगी है। हालांकि अब वायरल का दौर चल पड़ा है। अब इंटरनेट के युग में लीक से अधिक वायरल की समस्या बढ़ गई है। अब बदले दौर में छोटी सी लीक की घटना अब बड़ा वायरल बन जा रहीं है। वैसे भी लीक का डिजिटल संस्कण वायरल है।

व्यवस्था में और संस्थाओं में बढ़ती लीक की समस्या से लोगों के ख्वाब और दिल टूट रहे हैं। रोजी-रोटी के साथ शादी में शाहजादी लाने के सपने भी लीक हो रहे हैं। अब पढ़ाकू युवाओं की झोली में आसमान से टपकी लीक की समस्या उनकी सोच, साहस और धौर्य के बांध में सुराक यानी लीक करने में लगी है। वैसे भी हमारे यहाँ परीक्षा और लीक का चोली-दामन का साथ है। ऐसा लगता जैसे दोनों लैला-मजनू और हीर-रांझा हैं। दोनों के बीच अटूट प्रेम में हैं। एक दूसरे के बैगर दोनों रह नहीं सकते हैं।

वैसे यह समस्या ठीक कुछ ऐसी है जैसे विवाह मंडप में दूल्हा-दुल्हन सात फेरे लेने के लिए तैयार खड़े हों और दुल्हन अचनाक मंडप से गुपचुप प्रेमी के साथ भाग जाय। हमारे यहाँ हाल सालों में कोई ऐसी परीक्षा ही नहीं हुई जो बिना लीक के हुई। अब लीक, परीक्षा और बेरोजगारों के बीच ट्रेंगल लव का कारिडोर बन गया है।

वैसे भी हमारे भोजपुरी में एक पुरानी कहावत 'लागी नाहीं छूटे राम' यानी लीक (दाग) कभी एक बार लग जाय तो वह छूटता नहीं है। लाख जतन के बाद भी पेपर लीक हो जाता है। कुछ वैसा ही हाल प्रेम, परीक्षा और प्यार का है। फिलहाल चिंता करने की कोई बात नहीं है। क्योंकि मनीषयों ने कहा है कि चिंता हमें चिता की तरफ ले जाती है इसलिए चिंता छोड़कर इस बात पर चिंतन किया जाय कि लीक अब लॉक यानी बंद कैसे होगी।

संस्कृति

गिरीश जोशी
संस्कृति अध्येता और स्तंभकार

महाराष्ट्र की दिंडी यात्रा का मध्यप्रदेश से संबंध

इस समय पूरे देश में भक्तिमय वातावरण दिखाई दे रहा है । हाल ही में जगन्नाथ पुरी में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा शुरू हुई। देश में भक्ति आंदोलन की परंपराओं में से एक आषाढ़ एकादशी पर भगवान विठ्ठल के दर्शन हेतु पहुंचने वाली दिंडी यात्राएं भी महाराष्ट्र में शुरू हो गयी है। इस यात्रा की परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। लाखों लोग इस यात्रा में हर साल शामिल होते हैं।

पंढरपुर की दिंडी यात्रा

महाराष्ट्र में आषाढ़ मास की एकादशी के अवसर पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु भगवान श्री कृष्ण के विठ्ठल स्वरूप के दर्शन करने के लिए पंढरपुर पहुंचते हैं। पंढरपुर की इस यात्रा को वारि कहा जाता है। इस यात्रा में सभी भक्त पूज्य संतों के स्थान से उनकी पवित्र चरण पादुकाओं को पालकी में रख कर पैदल निकल पड़ते हैं। उसके आगे संतो द्वारा रचित अभंगों का गायन करते हुए वारकरी भक्त चलते है। इस शोभा यात्रा को दिंडी कहा जाता है।

वारकरी संत और उनका योगदान

विगत आठ-नो सौ वर्षों में वारकरी परंपरा का अनुसरण करते हुए अनेक बड़े-बड़े संत हुए हैं। खास बात यह है कि ये सभी संत समाज के अलग-अलग घटकों से निकले हैं, संत ज्ञानेश्वर द्वारा शुरू की गई इस परंपरा का अनुसरण करते हुए जिसमें खासतौर पर संत तुकाराम, संत एकनाथ,संत चोखा मेला, सन्त गोरा कुंभार, संत सेन महाराज, संत सावता माली, संत नरहरी सोनार जैसे संत हुए हैं ।

वारकरी संप्रदाय की एक विलक्षण आचार पद्धति है। जिसमें सभी बिना किसी भेदभाव के एक दूसरे के चरण छूते हैं। वे मानते हैं कि सभी प्राणियों के भीतर एक ही ईश्वर का अंश है । इसलिए वह आपस में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखते हैं। आज जब समाज में सामाजिक समरसता को बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार के प्रयोग किए जा रहे हैं ऐसे समय में संत ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व शुरू किया गया यह प्रयोग आज भी सफल है, निरंतर चल रहा है।

दिंडी यात्रा में व्यवस्था

जिस संत की समाधि पंढरपुर से जितनी दूरी पर है उतनी दूरी को पैदल चलकर पूरा करने में जितना समय लगता है उस समय के आधार पर दिंडी यात्राएं संतों के समाधि मंदिरों से निकलना शुरू होती है। सभी वारकरी भक्त अपने साथ केवल रोजमर्रा के लिए काम आने वाला सामान जैसे कुछ कपड़े, सहारे के लिए लकड़ी आदि लेकर चलते हैं। पूरे दिंडी मार्ग पर समाज द्वारा उनके भोजन,आवास आदि की व्यवस्था की जाती है, ये क्रम परपरागत रूप से अनेक वर्षों से चला आ रहा है ।

कुछ वर्षों पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने निर्मल वारी के नाम से एक सफल प्रयोग शुरू किया। इस यात्रा में लाखों की संख्या में भक्तजन एक ही निर्धारित मार्ग से चलते हैं, इसलिए मार्ग में किसी प्रकार का कचरा ना हो, गंदगी ना हो, प्रातः कालीन विधि के दौरान उत्सर्जित होने वाले मल का समुचित निस्तारण हो इसके लिए संघ के स्वयंसेवकों ने एक बड़ा अभियान चलाया जिसे बड़ी सफलता मिली है ।

दिंडी यात्रा का मध्य प्रदेश से संबंध

वर्तमान दिंडी यात्रा के स्वरूप का मध्यप्रदेश से संबंध है। मध्यप्रदेश में तत्कालीन सिंधिया स्टेट में हैबत राव पवार एक सेना अधिकारी थे, वे भगवान विठ्ठल के अनन्य भक्त थे, संत ज्ञानेश्वर पर उनकी बड़ी निष्ठा और श्रद्धा थी। जब वे सेवानिवृत हुए तब उन्होंने पुनः अपने जन्म स्थान

महाराष्ट्र में अरफल जाने की इच्छा महाराज के सामने रखी। महाराज ने उन्हें बड़ी धनराशि और सोने चांदी के जेवर आदि देकर सम्मान के साथ विदा किया ।

रास्ते में एक स्थान पर जनजाति समुदाय की एक टोली ने उनका रास्ता रोका, धन संपत्ति को लूट लिया । इस झड़प में उनके साथ चल रहे अनेक सैनिक भी मारे गए। हैबत राव को एक गुफा में बंद कर दिया गया। जब वह गुफा में बंद थे तब उन्हें लगा कि अब यहीं उनका अंत होने वाला है। उन्होंने भगवान विठ्ठल की प्रार्थना और संत ज्ञानेश्वर को हृदय की गहराई से पुकार लगना शुरू किया। ऐसा कहा जाता है कि संत ज्ञानेश्वर ने उस टोली के मुखिया की पत्नी को जिसे लंबे समय से संतान नहीं हो रही थी के स्वप्न में आकर कहा कि यदि तूम मेरे इस भक्त को छोड़ देते हो तो तुम्हें संतान प्राप्ति होगी। उसने ये बात अपने मुखिया पति को बताई । टोली ने हैबत राव को छोड़ दिया। लेकिन इस बात का हैबत राव जी के मन पर बड़ा परिणाम हुआ और उन्होंने अपने गांव अरफल न जाते हुए संत ज्ञानेश्वर की संजीवन समाधि आळंदी जाने का निश्चय किया।

हेबत राव का कार्य

यहां उन्होंने संत ज्ञानेश्वर की समाधि मंदिर की आजीवन सेवा की। सेना में रहने के कारण वे हर काम बड़े अनुशासन और व्यवस्थित पद्धति तरीके से करने के आदी थे । हर साल निकलने वाले दिंडी यात्रा के स्वरूप को देखकर उसे ज्यादा व्यवस्थित, अनुशासित और क्रमबद्ध करने का विचार उनके मन में आया ।

इसके लिए उन्होंने 1832 में दिंडी यात्रा के लिए अनुशासन बनाया भक्तों के चलने का क्रम तय किया। सबसे आगे भगवा ध्वज, बड़े मंजीरे जिन्हें मराठी में टाळ कहते है, फिर तंबोरा वादक, पालकी जिसमें संतों की चरण पादुकाएं रहेगी और पीछे सभी वारकरी भक्ति चलेंगे ये क्रम बनाया।

इस यात्रा को शाही स्वरूप देने के लिए उन्होंने बेलगांव के सरदार शितोले से अनुरोध किया। उन्होंने पालकी को शाही स्वरूप देने के लिए रेशमी वस्त्र, हाथी और घोड़े और अनेक साजो सामान देना शुरू किया। आज लगभग 196 वर्षों के बाद भी दिंडी इसी स्वरूप में चलती हुई दिखाई देती है। हैबत राव के इस अनुपम कार्य के कारण आज श्रद्धालु उनको हैबत बाबा के नाम से याद करते हैं ।

मध्यप्रदेश में दिंडी यात्रा की शुरुआत

होलकर रियासत के जागीरदार श्री विसाजी लाम्भाते भगवान विठ्ठल के परम भक्त थे और हर साल महाराष्ट्र के पंढरपुर की वारि में जाते थे। एक बार किसी कारण वे पंढरपुर नहीं जा सके, जिससे वे बड़े दुखी हुए। कहा जाता है उसी रात भगवान विठ्ठल ने उनके स्वप्न में आकर दर्शन दिए और कहा कि वे स्वयं उनके पास आ चुके हैं और पास के ही एक कुंड में हैं। स्वप्न में दिखे स्थान से भगवान विठ्ठलनाथ की स्वयं स्वयंभू मूर्ति को निकाला गया।

पंढरपुर की तरह इंदौर में भी कान्ह और सरस्वती नदी के संगम के पास एक ऐसे स्थान को चुना गया जहाँ नदी अर्धचंद्राकार में मुड़ती है। इस कारण इंदौर के इस क्षेत्र को 'चंद्रभागा' कहा जाने लगा। यहाँ भगवान विठ्ठल जिन्हें पंढरीनाथ भी कहा जाता है के भव्य मंदिर का निर्माण महाराजा मल्हार राव होलकर द्वितीय के शासनकाल के दौरान 1811 से 1833 के बीच करवाया गया ।

इंदौर के शुकदेव शास्त्रीजी ने 1944 में दिंडी यात्रा शुरू की। इसी प्रकार से 1949 में श्री बापुराव धनावडे भी एक दिंडी यात्रा इंदौर में शुरू की ये यात्राएं आज भी निकलती है। वर्ष 2006-07 में माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर श्री गुरुजी की जन्मशताब्दी वर्ष में समाज में समरसता स्थापित करने के उद्देश्य से कार्यक्रम हो रहे थे। इसे कड़ी में दिंडी यात्रा को बड़ा स्वरुप देने का विचार कर समग्र मराठी समाज, मध्यप्रदेश मंच बनाकर बड़े पैमाने पर इंदौर में दिंडी यात्रा शुरू हुई। आगे चलकर ये यात्रा 2010 में भोपाल, 2013 में छिंदवाडा, 2015 में जबलपुर और गत वर्ष से उज्जैन में भी शुरू हुई है। मध्यप्रदेश में पंढरपुर की तर्ज पर ये यात्राएं निकाली जा रही है। इस तरह महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश को सांस्कृतिक रूप से जोड़ने की एक मुख्य कड़ी साबित हो रही है।

देवशयनी एकादशी

गरिमा विजयवर्गीय
लेखक पत्रकार हैं।

देव सोये, उत्सव जागे

सावन से शुरू होकर कार्तिक तक, हर महीने किसी न किसी देव की उपस्थिति दर्ज दिखती है हमारी संस्कृति में, मानो बांध ली हो हर देवता ने अपनी-अपनी जिम्मेदारी कि अब उन्हें जमीन पर उतरना है और उसके बाद किसी दूसरे को। हमारी संस्कृति में गुरुओं को ब्रह्मा-विष्णु-महेश के समकक्ष रखा गया है, संभवतः इसीलिए उत्सवों का सिलसिला शुरु होता है आषाढ़ में गुरु पूर्णिमा से, जब समस्त दुनिया अपने गुरुओं को नमन करती है। सावन तो पूरा महीना ही भोले बाबा के नाम दर्ज होगा।

देव सो जाएंगे आज से, अब ना तो शादी ब्याह होंगे, ना ही कोई और धार्मिक आयोजन। हालांकि इसके साथ ही शुरू हो जाएगा सनातन धर्म के तमाम वार त्योहारों का सिलसिला। बहुत विरोधाभासी सा लगता है यह तथ्य, कि एक तरफ सावन से लेकर कार्तिक तक देवों के सोने का सिलसिला चलता है और दूसरी और यही वह समय है जब तमाम देवी-देवता अपेक्षाकृत अधिक चैतन्य अवस्था में, अधिक जागृत अवस्था में अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं दुनिया में लोक परंपराओं के माध्यम से।

सावन से शुरू होकर कार्तिक तक, हर महीने किसी न किसी देव की उपस्थिति दर्ज दिखती है हमारी संस्कृति में, मानो बांध ली हो हर देवता ने अपनी अपनी जिम्मेदारी कि अब उन्हें जमीन पर उतरना है और उसके बाद किसी दूसरे को। हमारी संस्कृति में गुरुओं को ब्रह्मा-विष्णु-महेश के समकक्ष रखा गया है, संभवतः इसीलिए उत्सवों का सिलसिला शुरु होता है आषाढ़ में गुरु पूर्णिमा से, जब समस्त दुनिया अपने गुरुओं को नमन करती है। सावन तो

पूरा महीना ही भोले बाबा के नाम दर्ज होगा। इसी दौरान नाग पंचमी, हरियाली तीज जैसे अनगिनत लोक उत्सवों के माध्यम से हम अन्य देवी-देवताओं को भी स्मरण करते चलेंगे। लगते भादों जन्माष्टमी पर बाल कृष्ण अवतरित हो जाएंगे और उनकी लीला देखने उनके पीछे पीछे गणेश चतुर्थी पर श्री गणेश उतर आयेंगे।

भादों के 10 दिन श्री गणेश उत्सव के तौर पर गणेश जी की जिम्मेदारी होगी सृष्टि की देखरेख की। वहीं क्वार की आमद होते ही तमाम पितृ देव अपने अपने घर लौटेंगे और पितरों की रवानगी के साथ ही जगत जननी मां दुर्गा नवरात्रि में घर-घर स्थापित हो जाएंगी। कार्तिक तो उत्सवों का महीना है ही, जब स्वयं श्री राम सहपरिवार घर वापसी करेंगे। इतने में ही दस्तक हो जाएगी देवउठनी एकादशी की, जब देवों के उठने के साथ ही समाज एक बार फिर लौट चलेगा धार्मिक आयोजनों और पूजा पाठ की ओर।

कितनी उत्सवधर्मी है ना हमारी संस्कृति, वे 4 महीने जब बारिश की वजह से जीवन थम सा जाए, कोई बड़े सामूहिक आयोजन ना संभव हों, तब समूचे देवों ने अपने ऊपर ले ली जिम्मेदारी उत्सवों की, ताकि बने रहें रंग जीवन के। कहना ना होगा कि प्रकृति पूजा भी भरपूर होती है इन दिनों में, क्योंकि हरियाली अमावस्या से लेकर आंवला नवमी तक, अधिकतर उत्सव सीधे प्रकृति से ही तो जुड़े हुए हैं।

बुंदेलखंड में एक प्रथा है 'आषाढ़ के भोग' की। आषाढ़ नवरात्रि में सासू मां ग्राम देवता, कुल देवता समेत अन्य सभी देवी देवताओं को लड्डू बाटी का भोग पहुंचाती हैं। पहले तो समझ ही नहीं आया कि आषाढ़ का भोग क्या होता है। फिर पता चला कि देवशयनी ग्यारस को देव चार महीने के लिए सोयें, उसके पहले घर की माताएं उनको लड्डू बाटी खिला देती हैं, ताकि उनको नींद अच्छी आए। कितनी सुंदर और अपनेपन से भरी परंपरा है ना, सब जानते हैं कि लड्डू बाटी खाकर खूब नींद आती है, इसीलिए देवों को भी आषाढ़ में ये ही खिलाते हैं और लोकभोजन तो है ही चूरमा-बाटी, इसलिए देव भी क्यों ना उसका आनंद उठाएं।

हमारे दौर में सिनेमा

बादल सरोज
लेखक लोकजतन के संपादक हैं।

जावेद अनीस और उनकी किताब दृष्टि और दृष्टिकोण देते हैं

जावेद अनीस शब्द के पूरे अर्थ में एक विलक्षण व्यक्तित्व थे। वे एक मुखर मौन थे, मूक कोलाहल थे, एक ऐसी नज़्म थे जिसे पूरा लिखा जाना और सुना जाना बाकी था, एक ऐसी पेंटिंग थे जो दिखने में ऊदे ऊदे से रंगों की लगती थी मगर तीनों प्राथमिक रंगों और उनके सातो वर्णों के अनगिनत शेड्स समेटे हुए थी। इस किताब 'हमारे दौर में सिनेमा' में फिल्म 'की का' की समीक्षा में लिखे एक सूत्रवाक्य में जैसा उन्होंने लिखा है कि 'मर्दानगी का एक रूप नहीं होता' उसी तरह उनके कई रूप थे। मगर थे सभी सकारात्मक।

जो उनसे मिले थे वे जानते हैं कि वे काफी चुप्पे स्वभाव के थे। नियमतः जो सामान्यतः बातूनी नहीं होते वे अभिव्यक्ति के अन्य तरीकों में बहुत विस्फोटक होते हैं- जावेद ऐसे ही थे। संगीत की भाषा में कहें तो जावेद एक काउंटर मेलोडी थे। धुन उनके बिना पूर्ण नहीं होती। धर्म की भाषा में देखें तो वे एक ऐसी आयत, ऋचा, वर्स और सूक्ति थे जिसके बिना उपासना पूरी नहीं होती।

'हमारे दौर में सिनेमा' की समीक्षाओं से गुजरते हुए साफ़ हो जाता है कि जावेद के पास नजर भी है, नजरिया भी। दृष्टि अमूमन सभी के पास होती है मगर दृष्टिकोण परवरिश और मेहनत माँगता है। दृष्टिकोण दृष्टि का मोहताज नहीं होता- साहित्य में होमर, सूरदास राजनीति में भारत की संसद में अहम् भूमिका निबाहने वाले दो सांसद स्नेहांशु आचार्य एवं यमुना प्रसाद शास्त्री इसके उदाहरण हैं- जिन्होंने नेत्रों का सहारा लिए बिना सब कुछ देखा भी सच को दिखाया भी।

'हमारे दौर के सिनेमा' में जावेद फिल्म की बात करते में सिर्फ फिल्म की बात नहीं करते हैं, उसके क्राफ्ट के साथ उसके असर की बात करते हैं और उसी के साथ साथ समाज के यथार्थ के साथ उसके जुड़ाव की बात करते हैं।

फ़िल्में मनोरंजन का साधन मानी जाती हैं, हैं भी। मगर यथार्थ और मनोरंजन के बीच पारस्परिक पूरकता है। फिल्में अपने समय के सामाजिक यथार्थ से अलग नहीं होती। वे दर्शक के सोच, संस्कार और अभिरुचि का ध्यान रखती हैं। वहीँ उन्हें प्रभावित भी करती हैं। दोनों तरह से प्रभावित करती हैं- संस्कारित और कुसंस्कारित भी कर सकती हैं। फ़िल्में एक बेहतरीन सम्मिश्रण होती हैं। वे एक साथ सुख दुःख, आनन्द पीड़ा, सामंजस्य और संघर्ष के समावेश का ध्यान रखती हैं। इस तरह फिल्मों की एक द्वंद्वात्मक डायलेक्टिकल भूमिका होती है। अपने कालखंड के परिवेश से वे प्रभावित भी हो रही होती हैं और इसी के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक ढांचे को प्रभावित भी कर रही होती हैं।

'हमारे दौर में सिनेमा' में कुल जमा 28 फिल्मों और एक शख्सियत दिलीप कुमार पर केन्द्रित व्यक्ति चित्र इस तरह 29 लेख हैं। यह संयोग ही नहीं कि ये सभी हमारी पसंद की भी फिल्में हैं। इनमे से दो तिहाई ऐसी हैं जिन्हें हम देख भी पाए हैं।

समीक्षा का जावेद का तरीका अलग है, वे फिल्मों की डी-कोडिंग करते हैं। यहाँ सिर्फ दो को लेते हैं। रजनीकांत और नाना पाटेकर, हुमा कुरैशी और अंजलि पाटिल की फिल्म च्क्कालाज्ज और शाहरुख खान, माहिरा खान, नवाज़ुद्दीन और जीशान की 'रईस'। दोनों में जावेद ठीक वही बात पकड़ते हैं जो पकड़ी जानी चाहिए। दिखने में दोनों पॉपुलर फिल्म हैं लेकिन दोनों ही पोलिटिकल फिल्म है। काला तीन बड़े सवाल उठाती है- विस्थापन और ध्वंस- जिसके निशाने पर जाहिर है वंचित समुदाय प्रमुख है-फिल्म इसे वर्गीय नजरिये से उठाती है। यह वह नजरिया है जिसे इन दिनों फिल्मों में बहुत कम कर दिया गया है। दूसरा सामाजिक भेदभाव और उसके प्रतिकार में जरूरी एकता का अम्ब्रेला देती है- फिल्म लाल और नीले के मेल के साथ पूरी होती है, जो आज का सबसे सटीक पोलिटिकल स्टेटमेंट है।

फ़िल्म जहां इंडिया और भारत- अमीरी और गरीबी के बीच के संघर्ष को मुखरता से उठाती है। पूँजी दैत्यों के नखशिख साफ़-साफ़ दिखाती हैं। वहीं इसकी एक सहधारा भी है जो फ़िल्म में शुरू से अंत तक विजिबल भी है, वोकल भी है। जाति श्रेष्ठता के दम्भ का प्रतिकार करती, पूरी ठसक के साथ उसके श्रेणीक्रम का धिक्कार करती। फ़िल्म ने साहस के साथ इस जन्मना श्रेष्ठता के धर्म को मय मंत्रों और पुरोहिताई के ठगतंत्रों के साथ प्रस्तुत किया है। जाति के रूप में भी धर्म के नाम पर भी।

इन दोनों धाराओं के साथ, समान्तर नहीं साथ, एक तीसरी धारा भी चलती है। स्त्री मुक्ति और समानता की धारा। धरा के नीचे नीचे बहने वाली नदियों की तरह भूजल का स्तर ऊंचा रखती, ऊपर चलती बयार को शीतल और सुगन्धित रखती। बॉक्स ऑफिस और सुपर स्टार और पॉपुलर सिनेमा आदि इत्यादि के लिहाज से यह जोखिम का काम है। इसी के साथ फिल्म प्रेम को भी बहुत सकारात्मक तरीके से रखती है- पत्नी और पूर्व प्रेमिका के द्वैत को अद्वैत में देखती है।

इसी तरह से रईस है, जिसमें एक बूटलेगर को उसके खलनायकत्व के रूप में नहीं, उसके पूरे इवोल्यूशन में, एक बेरोजगार युवा से शराब तस्कर बन जाने के रूप में रखा जाता है। जावेद ठीक दर्ज करते हैं कि इसमें रईस- जो एक वास्तविक व्यक्ति से उठाया गया चरित्र है

वह सिर्फ मुसलमान नहीं है। इस फिल्म में हिन्दू-मुसलमान उतना ही है जितना इन दिनों बनाने की कोशिश की जाती है। राजनीतिक इस्तेमाल के लिए गढ़ा गया मुसलमान, नागरिक समाज का मुसलमान नहीं।

रईस पर लिखते हुए जावेद ने शाहरुख़ खान की एक ख़ास बात याद दिलाई है और वह यह कि वे ऐसे अभिनेता हैं जिन्होंने आज के दौर में मुस्लिम चरित्र के नायकों वाली फिल्में बनाई हैं। धड़ल्ले से बनाई हैं- बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाने वाली बनाई हैं। शाहरुख को अभिनय की बजाय ग्लैमर के लिए जाना जाता है मगर माय नेम इज खान सहित अनेक फिल्मों में उन्होंने अपनी क्षमता दिखाई है। किन्तु जो बात शाहरुख को बाकी अनेक अभिनेताओं से अलग करती है वह उनक कथनी-करनी दोनों के एक जैसा होने के प्रति सजग होना है। उन्होंने धीमी तीव्रता के साम्प्रदायिक जहर वाली फिल्मों में न काम किया न बनाया। सिर्फ पैसे के लिए सरफ़रोश या वेडनेसडे जैसे प्रयोग उन्होंने नहीं किये।

जावेद फिल्मों की स्कैनिंग भी करते हैं, ऑटोप्सी भी। वे भारतीय विशेषकर बॉलीवुड की फिल्मों में दक्षिण पंथ की घुसपैठ का अध्ययन करते हैं। यह जरूरी काम है। सिनेमा की वर्तनी और भाषा शैली में आये बदलाव को देखते हैं। तनु वेड्स मनु रिटर्न की उनकी समीक्षा में कंगना रानौत सराहना पाती हैं। ठीक ही पाती हैं। एक्ट्रेस कंगना ने इस और एक-दो और फिल्मों में उत्कृष्ट अभिनय किया है। विचारधारा आपके सृजन यहाँ तक कि शक्ल में भी कैसा बदलाव ला देती है इसकी उदाहरण आज भले कंगना बन गयी हों- मगर जब वे आई थीं तब उन्होंने कुछ अच्छी अदाकारी वाली फिल्मे भी दी हैं। गेट वेल सून कंगना बेन।

फिल्मों को लोकप्रिय और गंभीर श्रेणी में बांटने का काम किये जाने का प्रचलन है। मगर इसे थोड़ा सजगता के साथ किये जाने की आवश्यकता है। जावेद भी यही मानते हैं। बात यह है कि लोकप्रियता सापेक्ष होती है- सिर्फ क्राफ्ट या कलात्मकता की श्रेष्ठता के आधार पर लोकप्रिय फिल्मों का तिरस्कार गलत बात है। यह बात सही है कि भारत का लोकप्रिय सिनेमा कभी रेडिकल नहीं रहा- मगर यह कभी रिएक्शनरी भी नहीं रहा। हर कम्युनिस्ट एक अच्छा व्यक्ति होता है यह नियम है, मगर हर अच्छा व्यक्ति कम्युनिस्ट हो यह जरूरी नहीं है। और ऐसे अच्छे व्यक्ति करोड़ों में नहीं अरबों में हैं। यही बात फिल्मों तथा कला के अन्य रूपों के बारे में है।

भारत का सिनेमा लिबरल और काफी हद तक प्रगतिशील मूल्यों का वाहक रहा है। इस देश में सेकुलरिज्म को जनमानस की चेतना में बिठाने का काम जितना फिल्मों और साहित्य ने किया है उतना ही राजनीतिक संस्थान भी करते तो आज भेड़ियों के गाँव में घुसने की जो स्थिति आ गयी है वह नहीं आती। लोकप्रिय सिनेमा ने सामाजिक, राजनीतिक सवालों को हमेशा उठाया है। छुआ तो है ही। आज से नहीं शुरुआत से। जैसे मूक फिल्मों के दौर में बाबूराव पेंटर की सावकारी पाश साहूकारी फंदा जैसी फिल्मे आयीं। जैसे ये भारतीय फिल्मे थीं जिन्होंने भारत के शासकों बादशाहों को आक्रांता बनाकर नहीं दिखाया, प्रेम और ईर्ष्या करने वाले हाड़-मांस के इंसानों के रूप में प्रस्तुत किया। बम्बईया कही जाने वाली फिल्मों ने पारसी थिएटर के जमाने से ही देश के बड़े हिस्से को नयी बोली -हिन्दुस्तानी- दी।

इस तरह लोकप्रिय सिनेमा सिर्फ सतही नहीं होता- वह क्युरेटिव यानी निरोग करने वाला भी है, थिरेपेटिक यानी रोग न होने देने की ताकत देने वाला भी है। यह पोषण भी देता है और वैक्सीन भी लगाता है।

पठान फ़िल्म की समीक्षा में जावेद इसे दर्ज करते हैं। पठान और जवान दोनों ही अपने सारे चटक मटक फ़ॉर्मूलों के बावजूद प्रतिकार और प्रतिरोध की फिल्में हैं। जैसा जावेद लिखते हैं- पठान में नायक खलनायक दोनों भारतीय हैं। खलनायक हिन्दू है और नायक हिन्दू नहीं है- वह क्या है यह खुद उसको नहीं पता मगर उसकी स्वघोषित आइडेंटिटी पठान है। पठान का बच्चा नहीं पठान। यह एक बड़ा सन्देश है खासकर तब जब फिल्मों में तुरुक दाढ़ी और परिधान हथियार की तरह इस्तेमाल किये जा रहे हैं।

इसी तरह जवान फिल्म जो मुद्दे उठाती है वे प्रतिरोध के मुद्दे हैं। किसानों की कर्ज माफ़ी, स्वास्थ्य सेवा का बंटाधार आदि। इस सबके साथ जवान पूरी तरह एकल प्रतिरोध नहीं है। इसमें सामूहिकता है। ऐसी सामूहिकता जिसमे स्त्री मोर्चे पर है।

जावेद फिल्मों के खिलाफ सुनियोजित हमले को भी लेते हैं और उनकी केमिस्ट्री और जियोग्राफी दोनों आंकते हैं। वे दर्ज करते हैं कि पठान के खिलाफ जितना तीव्र हमला बायकाट गैंग का था उसका उतना ही तीखा जवाब जनता ने उन्हें कामयाब बनाकर दिया। इस कदर दिया कि स्वयं ब्रह्मा जी को अपने गिरोह के उन्माद की भर्त्सना करने के लिए मजबूर कर दिया। यही बात जवान के मामले में भी देखी गयी।

जनता में ही नहीं भारतीय सिनेमा में भी प्रतिरोध जीवित है; सार्थक और अच्छी फिल्मों का अकाल नहीं है, उनके नाम गिनाये जा सकते हैं। विस्तार में जाने की वजह से फिलहाल नहीं गिना रहे। अनेक नाम जावेद ने लिखे हैं। उनके बाद भी कई फिल्में आई हैं। इसी के साथ यूट्यूब पर पॉकेट फिल्म्स, शार्ट फिल्म्स हैं जो कमाल कर रही हैं। इन्हें समान्तर फिल्म कहना ठीक नहीं। ये महा बजट की प्रोपगंडा फिल्मों के मुकाबले देखन में छोटी लगे पर घाव करें गंभीर है।

जावेद द्वारा की गयी फिल्म समीक्षाओं की किताब फिल्मों की गहराई से पड़ताल की कोशिश है जिसको रेखांकित किया जाना इसलिए जरूरी है कि यह समय जिस सर्वग्रासी संकट का समय है उसमे अँधेरे सिनेमा के परदे यानी सिल्वर स्क्रीन पर भी उमड़ घुमड़ कर आ रहे हैं। जैसा कि कहते हैं- मोर्चे चुने नहीं जाते, मोर्चे मिलते हैं। उन पर जूझा जाता है। जावेद की यह किताब हमें इसका शऊर और सलीका सिखाती है। दृष्टि और दृष्टिकोण दोनों देती है।

चातुर्मास : प्रकृति और जीवन के रिचार्ज का सुअवसर

देवशयनी एकादशी विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

अद्भुत प्रतीक है श्रीहरि का चातुर्मास में योगनिद्रा में जाना। हिंदू मास आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी तिथि से चातुर्मास की शुरुआत होती है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की देवउठनी एकादशी को भगवान विष्णु जाग जाते हैं। पहले चातुर्मास से शुक्ल एवं कृष्ण दोनों पक्षों से एकादशी तिथि के संबंध को समझते हैं। सूर्य से चंद्रमा की बारह डिग्री की दूरी एक तिथि का मान होता है। प्रत्येक तिथि में यह दूरी बढ़ती जाती है। खगोल शास्त्र के अनुसार एकादशी तिथि यानी ग्यारहवें चंद्र दिवस पर चंद्रमा पृथ्वी और सूर्य से शुक्ल पक्ष में लगभग 130 डिग्री और कृष्ण पक्ष में 310 डिग्री के कोण पर होता है। चांद की कलाओं और सूर्य की स्थिति के कारण अथाह सागर में ज्वार-भाटा आते हैं। मानव शरीर में लगभग साठ फीसदी पानी होता है। इसीलिए चंद्रमा केवल समुद्र के जल पर नहीं, इंसानी शरीर पर भी असर डालता है। एकादशी पर सूर्य और चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण का खिंचाव संतुलित अवस्था में रहता है। एकादशी को नियमों का पालन करते हुए हम आनेवाली पूर्णिमा या अमावस्या पर चंद्र और सूर्य के प्रभावों को अपनी शारीरिक एवं मानसिक अनुकूलता के लिए तैयार करते हैं। इसीलिए हिंदू संस्कृति में एकादशी तिथि सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। एकादशी तिथि से चातुर्मास का प्रारंभ इसी महत्व को रेखांकित करता है।

दिन भर की सक्रियता के पश्चात जीवों को विश्राम की आवश्यकता होती है जिसमें वे, विशेष रूप से मनुष्य, शारीरिक और मानसिक तनाव से मुक्त होकर शांति और ताजगी प्राप्त करते हैं। ऋतुओं की आपाधापी के बीच प्रकृति भी अल्प समय ही सही, ब्रेक लेने के लिए अपनी कुछ गतिविधियों को धीमा करने लगती है। सूरज की प्रचंड किरणों से झुलसी, नीरस हुई तपन से व्याकुल धरती को पुनः तरावट, स्फूर्ति और प्रफुल्लता के लिए वर्षा ऋतु बड़ा अवलंबन बनकर आती है। वर्षा और शरद ऋतु के चार महीने कुदरत भी थोड़ा आराम करती है। बादल, बारिश, ठंडक सुकून बनकर आते हैं। सृष्टि के नियंता भी योगनिद्रा में चले जाते हैं।

अद्भुत प्रतीक है श्रीहरि का चातुर्मास में योगनिद्रा में जाना। हिंदू मास आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी तिथि से चातुर्मास की शुरुआत होती है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की देवउठनी एकादशी को भगवान विष्णु जाग जाते हैं। पहले चातुर्मास से शुक्ल एवं कृष्ण दोनों पक्षों से एकादशी तिथि के संबंध को समझते हैं। सूर्य से चंद्रमा की बारह डिग्री की दूरी एक तिथि का मान होता है। प्रत्येक तिथि में यह दूरी बढ़ती जाती है। खगोल शास्त्र के अनुसार एकादशी तिथि यानी ग्यारहवें चंद्र दिवस पर चंद्रमा पृथ्वी और सूर्य से शुक्ल पक्ष में लगभग 130 डिग्री और कृष्ण पक्ष में 310 डिग्री के कोण पर होता है। चांद की कलाओं और सूर्य की स्थिति के कारण अथाह सागर में ज्वार-भाटा आते हैं। मानव शरीर में लगभग साठ फीसदी पानी होता है। इसीलिए चंद्रमा केवल समुद्र के जल पर नहीं, इंसानी शरीर पर भी असर डालता है। एकादशी पर सूर्य और चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण का खिंचाव संतुलित अवस्था में रहता है। एकादशी को नियमों का पालन करते हुए हम आनेवाली पूर्णिमा या अमावस्या पर चंद्र और सूर्य के प्रभावों को अपनी शारीरिक एवं मानसिक अनुकूलता के लिए तैयार करते हैं। इसीलिए हिंदू संस्कृति में एकादशी तिथि सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। एकादशी तिथि से चातुर्मास का प्रारंभ इसी महत्व को रेखांकित करता है।

कृषि प्रधान भारत देश में आषाढ़ माह का अंतिम पखवाड़ा आते-आते आकाश में बादल छाने लगते हैं। किसान फसल उगाने की तैयारी में जुट जाते हैं। जमीन की तैयारी, बुवाई, सिंचाई, फसल की देखभाल, कटाई और गहाई कर अनाज घर में लाना, इसी काम में वह आठ-दस महीने व्यस्त रहता है। ज्येष्ठ और आषाढ़, दो महीने कुछ फुर्सत के होते हैं जिसमें वह अपने जरूरी पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक काम पूरे करता है। यही कारण है कि अधिकांश शादियां गर्मियों में होती थीं। ससुराल गई बहनों को भाई सावन में मायके ले आते थे। सावन और भादों दो महीने वर्षा ऋतु के हैं। बाढ़, जलभराव और भूस्खलन आदि के चलते मानवीय गतिविधियाँ और आवाजाही प्रभावित होती है। यहां तक कि किसी एक स्थान पर अधिक समय न टिकनेवाले साधु-संत भी चातुर्मास के लिए ठहर जाते हैं। गृहस्थों की

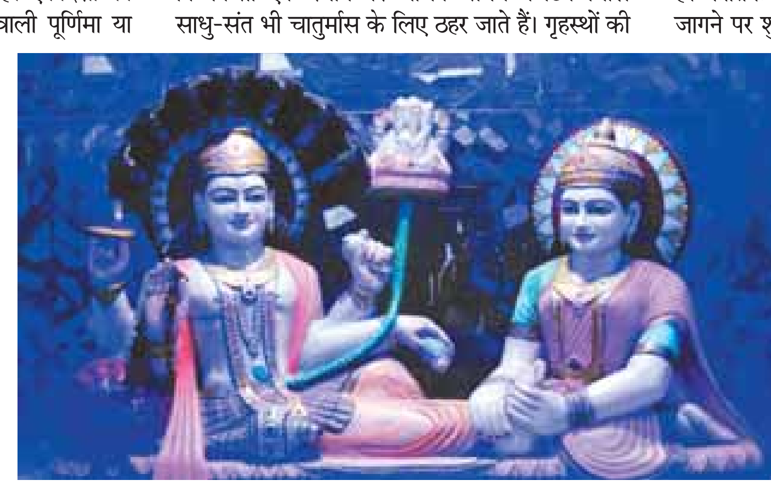

दिनचर्या में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को दुरुस्त रखने के लिए तीज-त्योहार, व्रत-उपवास बढ़ जाते हैं। नागपंचमी, रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, हरतालिका व्रत, गणेश चतुर्थी, अनंत चतुर्दशी, पितृपक्ष, नवरात्र , दशहरा, दीपावली आदि इन्हीं दिनों मनाई जाती हैं। इन्हीं दिनों सूर्य देव छह महीनों के लिए दक्षिणायन हो जाते हैं। दो महीने की बारिश के बाद दो और महीने वातावरण को सामान्य होने में लग जाते हैं। कार्तिक शुक्ल एकादशी से श्री हरि के योगनिद्रा से जागने पर शुभ कार्य प्रारंभ हो जाते हैं।

चातुर्मास में वातावरण के बदलावों से तन-मन को स्वस्थ रखने के लिए अनेक धार्मिक रीति रिवाजों को दिनचर्या का अनिवार्य अंग बना दिया गया। भारी वर्षा, नमी का बढ़ना, तापमान में उतार-चढ़ाव, हवा और आँधियों में परिवर्तन, जीव-जंतुओं की हलचल, जलभराव आदि प्राकृतिक उथल पुथल को ध्यान में रखते हुए रहन-सहन, खानपान के लिए नियम बनाए गए। धार्मिक ग्रंथों में संयमित जीवन को महत्ता दी गई। सावन में पत्तेदार सब्जियां, भादों में दही, आश्विन में दूध उत्पाद और कार्तिक में दालों से परहेज की धार्मिक मान्यता आध्यात्मिक लाभ के साथ स्वस्थ रहने के लिए भी जरूरी है। आयुर्वेद भी भोजन में ऐसे परहेज का समर्थन करता है। निरोग रहने के लिए लंघन करना अच्छा होता है। इन चार महीनों में व्रत, उपवासों की प्रचुरता का बड़ा कारण यह भी है।

चातुर्मास से कुछ रोचक धार्मिक मान्यताएँ भी जुड़ी हुई हैं। वामन अवतार में दैत्यराज बलि की दानशीलता से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें वरदान दिया था कि चातुर्मास में वे पाताल लोक में उनके यहां निवास करेंगे। देवशयनी एकादशी से देवउठनी एकादशी तक चार महीने भगवान विष्णु के पाताल लोक में शयन करने पर सृष्टि के संचालन का दायित्व भगवान शिव संभालते हैं। देवउठनी एकादशी में श्रीहरि के योगनिद्रा से जागने के बाद कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को शंकर भगवान उन्हें ब्रह्मांड का कार्यभार वापस सौंपते हैं। यह विशिष्ट पर्व 'हरिहर मिलन' के नाम से विख्यात है। काशी के विश्वनाथ मंदिर और उज्जैन के महाकाल मंदिर में इस महापर्व को धूमधाम से मनाया जाता है।

भगवान विष्णु योगनिद्रा में भी जागृत रहते हैं। वे परम चेतना हैं। वे सदा सर्वदा चैतन्य हैं। सक्रियता के मध्य अल्प समय के लिए विश्राम की आवश्यकता प्रकृति को होती हैं, परम पुरुष परमात्मा को नहीं। जैसे मनुष्य का अंतःकरण हमेशा चैतन्य रहता है। निद्रावस्था में भी अवचेतन मन की सक्रियता मनोविज्ञान सम्मत है। यह अवधि मनुष्यों को आत्म-परीक्षण, समीक्षा, तप, व्रत, अनासक्ति के अभ्यास और शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के साथ शांति प्राप्त करने के अवसर प्रदान करती है। सभी को इस समय का भरपूर सदुपयोग करना चाहिए।

आदिवासी ग्राम डुंडादेह में रात्रि चौपाल एसडीएम बबीता राठौर ने मातृशक्ति की सुन कहा- नशामुक्त बनाएंगे ग्राम

सोहागपुर। सोहागपुर विधानसभा के आदिवासी ग्राम डुंडादेह में कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के मार्गदर्शन में डॉ. बबीता राठौर ने लगाई रात्रि चौपाल, महिलाओं की समस्याएं सुनीं। इस अवसर पर ग्राम डुंडादेह में रात्रि चौपाल का आयोजन करके ग्रामीण महिलाओं से सीधे संवाद स्थापित किया गया। इस रात्रि चौपाल के दौरान महिलाओं ने एसडीएम डॉ बबीता राठौर को बताया कि ग्राम के अनेक परिवारों में शराब के नशे लत से परेशान हैं। जिसके चलते रहने के कारण घरेलू विवाद एवं झगड़े की घटनाएं होती रहती हैं। इन नित्यप्रति होने वाली घटनाओं से परिवार का वातावरण प्रभावित हो रहा है। बच्चों पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। कुछ महिलाओं ने यह भी बताया कि ग्राम के कुछ किशोर एवं युवा बच्चे भी नशे की लत की ओर बढ़ रहे हैं।जो हमारे ग्राम के लिए गंभीर चिंता का विषय है। उल्लेखनीय है कि इस विक्राल समस्या को लेकर ग्राम की महिलाएं गत सप्ताह आयोजित जिला जनसुनवाई में कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के समक्ष भी अपनी बात रख चुकी थीं। मामले की गंभीरता को देखते हुए एसडीएम डॉ. बबीता राठौर ने त्वरित पहल करते हुए नायब तहसीलदार श्री राम सिपाही मरावी के साथ ग्राम पहुंचकर रात्रि चौपाल आयोजित की। इस रात्रि चौपाल में महिलाओं की प्रत्येक समस्याओं को विस्तार से सुना। अनुविभागीय अधिकारी डॉ. राठौर ने महिलाओं को आश्वस्त किया कि प्रशासन उनकी समस्याओं के समाधान के लिए पूरी संवेदनशीलता के साथ कार्य करेगा। इसके साथ ही कहा कि शासन-प्रशासन समाज की सहभागिता से ग्राम को नशामुक्त बनाने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। आवश्यकता पड़ने पर विशेष जनजागरूकता अभियान चलाकर ग्राम को मॉडल नशामुक्त ग्राम के रूप में विकसित करने की दिशा में भी कार्य किया जाएगा। इस रात्रि चौपाल में जनप्रतिनिधि, ग्रामीण एवं प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे।

जिला अस्पताल में नहीं होते हड्डी से संबंधित ऑपरेशन, मरीज हो रहे परेशान

डॉक्टर मौजूद और ओटी भी तैयार, लेकिन ऑपरेशन हेतु जरूरी सामग्री ही नहीं

एस. द्विवेदी, बैतूल। जिला अस्पताल में हड्डी के ऑपरेशन के लिए मरीजों को परेशान होना पड़ रहा है। इसका मुख्य कारण है कि ऑपरेशन के लिए लगने वाली मुख्य सामग्री अस्पताल में मौजूद ही नहीं है। जिसकी वजह से हड्डी से संबंधित ऑपरेशन करवाने वाले मरीजों को बैरंग लौटना पड़ रहा है या फिर निजी अस्पताल में ऑपरेशन कराने पड़ रहे है। यहां गौरतलब है कि पुराना जिला अस्पताल भवन और उसकी ओटी भले ही छोटी थी, किन्तु वहां स्पाइनल, टीकेआर, टीएचआर, एक्सीडेंट में शरीर के किसी भी भाग की हड्डी फ्रैक्चर होने पर ऑपरेशन हो जाते थे। सिर्फ बड़े ऑपरेशन जैसे हिप ज्वाइंट, नी-रिपलेसमेंट आदि के लिए ही मरीजों को बाहर जाना पड़ता था, लेकिन वर्ष 2019 के बाद जिला अस्पताल के नए बड़े भवन में शिफ्ट होने के बाद कोविड संक्रमण आ गया और जिला अस्पताल में हड्डी के ऑपरेशन का सामान आना ही बंद हो गया। कोविड काल बीतने को लगभग 6 साल हो गये है, लेकिन जिला अस्पताल में न तो स्वास्थ्य विभाग से जरूरी सामग्री आई और न ही रोगी कल्याण समिति द्वारा स्थानीय स्तर पर किसी प्रकार की खरीदी की गई। जिससे हड्डी से संबंधित सभी प्रकार के ऑपरेशन वर्ष 2022 से होना ही बंद हो गये। अब मरीजों को हड्डी के ऑपरेशन के लिए निजी अस्पताल या नागपुर-भोपाल तक दौड़ लगाना पड़ रहा है।

बिल्डिंग निर्माण, फर्नीचर खरीदी पर ध्यान– जिला अस्पताल में बिल्डिंग निर्माण, फर्नीचर खरीदी सहित अन्य एस्टेब्लिशमेंट पर तो करोड़ों रुपए खर्च किये जा रहे है, लेकिन स्वास्थ्य महकमे के पास ऑपरेशन में लगने वाले विभिन्न जरूरी सामान खरीदने हेतु रूपए नहीं है। सामान के अभाव में जिला अस्पताल में कोविड काल के बाद से ही हड्डी के

किसी भी प्रकार के ऑपरेशन होना बंद हो गए हैं। जिला अस्पताल में आर्थोपेडिक थियेटर भी है, लेकिन प्रति ऑपरेशन औसतन 5 से 6 हजार रुपये तक लगने वाले सामान के अभाव में ऑपरेशन नहीं हो पा रहे है। एक्सीडेंट, सहित अन्य हादसों में हड्डी टूटने वाले मरीज प्रतिदिन जिला अस्पताल पहुंच रहे है, लेकिन उन्हें या तो भोपाल रेफर होना पड़ता है या फिर जिले के ही निजी अस्पताल में हजारों रूपये खर्च करके ऑपरेशन करवाने मजबूर होना पड़ रहा है। जिला अस्पताल से प्रतिमाह लगभग 200 से अधिक मरीज ऑपरेशन करवाने अन्य अस्पतालों में जाने को मजबूर हैं।

प्रतिदिन आते हैं 8 से 10 मरीज– जिला अस्पताल में रोजाना 8 से 10 मरीज सडक़ हादसे से संबंधित आते है। इन हादसों में ज्यादातर हड्डी टूटने जैसे मामले होते है, इन ऑपरेशन योग्य मरीजों को प्राथमिक उपचार देकर नागपुर-भोपाल रैफर कर दिया जाता है। जबकि जिला अस्पताल में ऑपरेशन करने के लिए दो हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर रूपेश पदमाकर एवं डॉ. चंदेल पदस्थ है। ऑपरेशन थियेटर भी नया बन गया है। लेकिन हड्डी के ऑपरेशन करने जरूरी सामान प्लेट, नैक, स्क्रू, फिक्स करने वाला सामान सहित अन्य जरूरी सामग्री नहीं होने से ऑपरेशन नहीं हो पा रहे है। विशेषज्ञों के अनुसार हड्डी के ऑपरेशन के लिए औसतन 6 से 7 हजार रुपये का सामान एक मरीज के ऑपरेशन पर लगता है। यह बहुत बड़ी रकम नहीं है। यदि अस्पताल प्रबंधन चाहे तो अन्य अनावश्यक खर्चो में कटौती कर रोगी कल्याण समिति से ही हड्डी के ऑपरेशन के लिए आवश्यक सामग्री बुलवा सकता है।

प्राथमिक उपचार एवं प्लास्टर तक सीमित है ट्रामा सेंटर– जिला अस्पताल के नवनिर्मित भवन में ट्रामा सेंटर शिफ्ट किया गया है। इसमें हड्डी संबंधित बीमारियों के मरीजों को भी भर्ती किया जाता है, लेकिन यहां पहुंचने वाले मरीजों का प्राथमिक उपचार के बाद सिर्फ प्लास्टर चढ़ाने तक का ही उपचार है। हड्डी में मामूली क्रेक होने, हड्डी के डिशलांकेड होने का ही उपचार होता है। ऑपरेशन की नौबत आने पर मरीजों को या तो निजी अस्पताल जाना पड़ता है या फिर भोपाल-नागपुर रेफर कर दिया जाता है।

अभी निजी अस्पताल या भोपाल-नागपुर के भरोसे मरीज

जिला अस्पताल में ऑपरेशन नहीं होने की वजह से हड्डी से संबंधित मरीज निजी चिकित्सालय या नागपुर-भोपाल के भरोसे है। जानकारों का कहना है कि नागपुर-भोपाल और बैतूल-इंदौर फोरलेन सडक़ बनने के बाद सडक़ हादसों में भी इजाफा हुआ है, ऐसे में जिला अस्पताल में हड्डी के ऑपरेशन की सुविधा होना बहुत जरूरी है, क्योंकि जिले में रोजाना 8 से 10 सडक़ हादसे होते है। इन हादसों में पीड़ित की हड्डी से संबंधित शिकायत पर उन्हें नागपुर-भोपाल रैफर कर दिया जाता है। ऐसे में आर्थिक रूप से सक्षम मरीज तो बड़े शहरों में रहकर ऑपरेशन करवा लेते, लेकिन जिले के गरीब मरीज, जिनके पास आयुष्मान कार्ड तक नहीं है, उन्हें बेहद परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

इनका कहना है

आवश्यक इम्प्लांट (सामग्री) उपलब्ध नहीं होने से वर्तमान में हड्डी के मेजर ऑपरेशन नहीं हो पा रहे है। केवल माइनर ऑपरेशन ही हो पाते है। शासन की ओर से अभी कुछ दिनों पूर्व बैठक में निर्णय लिया गया है कि शीघ्र ही इम्प्लांट की उपलब्धता हेतू निधि निर्धारित की जावेगी। जिसके पश्चात जिला अस्पताल में ही मेजर ऑपरेशन होने लगेगे। अभी अस्पताल में मेजर ऑपरेशन वाले मरीजों को मजबूरीवश रेफर करना पड़ता है।

– डॉ. जगदीश घोरे, प्रभारी सीएमएचओ एवं सिविल सर्जन, जिला अस्पताल बैतूल

हड्डी के ऑपरेशन हेतु आवश्यक सामग्री न होने के कारण मेरे द्वारा जिला अस्पताल में 16 साल की पदस्थापना के दौरान मात्र 5 साल ही हड्डी के ऑपरेशन किए जा सके है। विगत वर्ष 2022 से आवश्यक सामग्री नहीं होने के कारण हड्डी के ऑपरेशन नहीं हो पा रहे है।

– डॉ. रूपेश पदमाकर, हड्डी रोग विशेषज्ञ, जिला अस्पताल बैतूल

हरियाली का संकल्पः एक पौधा अनेक पीढ़ियों का जीवन

भोपाल। बढ़ते पर्यावरणीय संकट और घटते हरित क्षेत्र के बीच परोपकारिणी महिला मंडल ने समाज को प्रकृति संरक्षण का संदेश देते हुए पिपलानी स्थित आनंदेश्वर महादेव मंदिर परिसर में पौधरोपण किया। मंडल की अध्यक्ष डॉ. साधना गंगराड़े के नेतृत्व में सदस्यों ने बेल, शमी, आम, अमरूद और चीकू सहित विभिन्न फलदार एवं छायादार पौधे रोपे और उनके संरक्षण का संकल्प लिया।

इस अवसर पर डॉ. साधना गंगराड़े ने कहा कि एक पौधा केवल पेड़ नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ वायु, जल और स्वस्थ पर्यावरण की अमूल्य धरोहर है।

यदि हर व्यक्ति प्रकृति के प्रति अपना दायित्व समझे, तो पर्यावरण संरक्षण एक जनआंदोलन बन सकता है।

पौधरोपण अभियान में कविता अग्रवाल, विमलेश शुक्ला, हंसा बोन्द्रिया, बलजीत कौर, मंजू रावत, डॉ. अनामिका रावत, शर्मा आंटी, प्रभा सेन, कमलेश अग्रवाल, वंदना सिरपुरकर, डॉ. भावना श्रीवास्तव, अनीता सक्सेना, मंगला, उमा शर्मा एवं पूनम सक्सेना ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

अंत में सभी सदस्यों ने संकल्प लिया कि वे केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि उनकी नियमित देखभाल कर उन्हें वृक्ष बनने तक संरक्षित रखेंगे तथा समाज के अधिकाधिक लोगों को हरियाली बढ़ाने के इस अभियान से जोड़ेंगे। च्आज लगाया गया एक पौधा, आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी है।

जिला अस्पताल के आयुष विंग में फिर शुरू हुई पंचकर्म चिकित्सा

शरीर से विषैले तत्व बाहर निकालकर औषधियों से किया जाता है उपचार

बैतूल। जिला एलोपैथी चिकित्सालय परिसर स्थित आयुष विंग में पंचकर्म चिकित्सा सेवा पुनः शुरू हो गई है। आयुष विंग प्रभारी एवं आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. प्रियंका ऊईके ने बताया कि पंचकर्म आयुर्वेद की शोधन चिकित्सा है, जिसके माध्यम से शरीर के विषैले तत्व (टॉक्सिन्स) बाहर निकालने के बाद औषधियों से उपचार किया जाता है। इसके तहत स्नेहन, स्वेदन, दीपन और पाचन जैसी पूर्व प्रक्रियाओं के बाद वमन, विरेचन, बस्ती, नस्य एवं रक्तमोक्षण जैसी प्रमुख क्रियाएं की जाती हैं। जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकिकर ने बताया कि यह चिकित्सा संधिवात, आमवात, गठिया, मोटापा, मधुमेह, दमा, एक्जिमा, सोरायसिस सहित विभिन्न त्वचा रोगों, पक्षाघात, सिरदर्द, तनाव और अनिद्रा जैसी बीमारियों में प्रभावी मानी जाती है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में यह सुविधा जिला अस्पताल के आयुष विंग तथा जिला आयुर्वेद चिकित्सालय बैतूल में उपलब्ध है।

प्रभारी सीएमएचओ एवं सिविल सर्जन डॉ .घोरे ने अस्पताल के वार्डों का किया निरीक्षण

बैतूल। प्रभारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एवं सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक डॉ. जगदीश घोरे ने 24 जुलाई को मेटरनिटी वार्ड एवं ओपीडी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पीएनसी वार्ड में मरीजों से वन टू वन चर्चा की। इस दौरान मरीजों से अस्पताल में दी जाने वाली सेवाओं के बदले, स्टाफ द्वारा किसी प्रकार की राशि तो नहीं ली जा रही, के संबंध में भी पूछताछ कर जानकारी ली।

उन्होंने मरीजों एवं परिजनों को बताया कि अस्पताल में ऑपरेशन, दवाइयां, जननी एम्बुलेंस से आना-जाना, समस्त सेवाएं निशुल्क दी जाती है। आर्थिक लाभ के लिए कोई भी अस्पताल का स्टाफ राशि की मांग करता है तो उनकी शिकायत करें। इस दौरान उन्होंने अस्पताल में लगे डिस्प्ले नंबर के बारे में भी जानकारी दी गई।

डॉ.घोरे ने सोनोग्राफी कक्ष के निरीक्षण के दौरान स्त्री रोग विशेषज्ञ के अनुपस्थित रहने पर उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया। एएनसी कक्ष में निरीक्षण के दौरान स्त्री रोग विशेषज्ञ द्वारा राऊंड प्रारंभ नहीं करने पर स्पष्टीकरण लिया गया। इसके अलावा उन्होंने ओटी का भी निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

7 अगस्त को आयोजित होगी मध्यप्रदेश पर्यटन क्विज प्रतियोगिता

बैतूल। मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड जिला प्रशासन, जिला पुरातत्व पर्यटन एवं संस्कृति परिषद एवं स्कूल शिक्षा विभाग बैतूल, मध्यप्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम भोपाल के सहयोग से मध्यप्रदेश पर्यटन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन 7 अगस्त को दो चरणों में किया जाएगा। स्कूल शिक्षा विभाग जिला बैतूल द्वारा जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि प्रतियोगिता का उद्देश्य प्रदेश के समृद्ध शाली इतिहास, परम्पराओं ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर व पर्यटन के विस्तृत क्षेत्र से छात्र, छात्राओं को परिचित कराना है। प्रतियोगिता कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत के मार्गदर्शन में सम्पन्न कराई जायेगी। प्रतियोगिता में बैतूल जिले के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक अध्ययनरत 3 सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों का दल भाग लेगा। पंजीयन का उत्तरदायित्व संस्था प्राचार्य का होगा। प्रत्येक दल मे तीन सदस्यों का होना अनिवार्य है।

नगर परिषद शाहपुर के नवनिर्मित मोक्षधाम में लगेंगे 550 पौधे

बैतूल। नगर परिषद शाहपुर में नवनिर्मित मोक्षधाम में अमृत महोत्सव के अंतर्गत लगभग 550 पेड़ लगाए जाने की योजना हैं। शासन द्वारा चलाए जा रहे अमृत हरित अभियान में एक पेड़ मां के नाम अभियान अंतर्गत विभिन्न औषधि पौधे एवं आम, आंवला, बेलपत्र, नीम, करंजी, जामुन आदि कई छायादार एवं फलदार वृक्षों को लगाया जा रहा है। इन पेड़ों को लगाने का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण में संतुलन बनाए रखना एवं वर्षा लाने में पेड़ों का सहायक होना है। एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत प्रधानमंत्री मोदीजी का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक वृक्षारोपण करवाना है। इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में नगर परिषद शाहपुर के अध्यक्ष रोहित विक्की नायक, उपाध्यक्ष पम्मी छोटू राठौर, नगर परिषद के सीएमओ एस.आर. पंडाग्रे, नगर परिषद के अधिकारी, कर्मचारी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं नगरवासी उपस्थित रहे। सीएमओ एस.आर. पंडाग्रे ने बताया कि मोक्षधाम आने वाले 15 दिनों में पूरी तरह तैयार हो जाएगा। उसके सामने, जो गार्डन तैयार किया जा रहा है, वह भी दीपावली के पूर्व प्रारंभ करने की हमारी कोशिश रहेगी।

कलेक्टर ने कान्याखेड़ी परियोजना का किया निरीक्षण

परियोजना से 3,800 हेक्टेयर कृषि भूमि होगी सिंचित

■ शेष रहे डूब प्रभावितों को जल्द से जल्द मुआवजा राशि दिलाने के दिए निर्देश

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने आष्टा में कान्याखेड़ी परियोजना का निरीक्षण कर निर्माण कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने परियोजना में पूर्ण हो चुके कार्यों का अवलोकन किया तथा अधिकारियों से शेष कार्यों की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने कहा कि परियोजना के सभी शेष कार्यों को जल्द से जल्द पूर्ण कर शीघ्र परियोजना को पूर्ण रूप से क्रियाशील बनाया जाए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर को जानकारी दी गई कि बांध का मुख्य निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है तथा केवल नाला क्लोजिंग का कार्य शेष है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि आवश्यक विभागीय अनुमति प्राप्त कर नाला क्लोजिंग का कार्य शीघ्र प्रारंभ कराया जाए, ताकि परियोजना का निर्माण पूर्ण हो सके और वर्षा जल का अधिकतम संचयन सुनिश्चित किया जा सके। कलेक्टर ने परियोजना क्षेत्र से गुजर रही हाईटेंशन विद्युत लाइन को भी शीघ्र शिफ्ट कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि संबंधित विभाग आपसी समन्वय बनाकर लंबित कार्यों का समयबद्ध निष्पादन करें, जिससे परियोजना के पूर्ण होने में किसी प्रकार की बाधा न आए।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने डूब क्षेत्र के प्रभावित किसानों एवं भू-स्वामियों को देय मुआवजा राशि के भुगतान पर विशेष जोर देते हुए अधिकारियों निर्देश दिए कि शेष प्रभावितों को शीघ्र मुआवजा राशि दिलाई जाए। यदि किसी स्तर पर अनावश्यक विलंब हो रहा है अथवा विभागों के बीच समन्वय के अभाव में प्रकरण लंबित हैं, तो उनकी जानकारी तत्काल उपलब्ध कराई जाए, ताकि व्यक्तिगत स्तर पर समीक्षा कर उनका निराकरण कराया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रभावित हितग्राहियों को शीघ्र मुआवजा उपलब्ध कराना प्रशासन का दायित्व है। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने डूब क्षेत्र में आने वाले विस्थापित परिवारों से भी चर्चा कर उनकी समस्याएं सुनीं। इस दौरान विस्थापितों ने बताया कि पुनर्वास क्षेत्र में अभी तक बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं हो सकी है। इस पर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि आवश्यक समन्वय कर शीघ्र विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए, ताकि विस्थापित परिवारों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि पुनर्वास स्थलों पर बिजली, पेयजल, सड़क सहित सभी मूलभूत सुविधाएं समय पर उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाए।

कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि परियोजना से जुड़े सभी लंबित कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए तथा प्रत्येक कार्य की प्रगति की समीक्षा करते हुए निर्धारित समय-सीमा में उन्हें पूर्ण कराया जाए। उन्होंने कहा कि कान्याखेड़ी परियोजना क्षेत्र के किसानों के लिए महत्वपूर्ण है और इसके पूर्ण होने से सिंचाई सुविधाओं का विस्तार होगा तथा क्षेत्र के कृषि विकास को नई गति मिलेगी। निरीक्षण के दौरान आष्टा एसडीएम श्री महेंद्र प्रताप सिंह किरार, सिंचाई विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री मयंक सिंह, एसडीओ श्री रवि मालवीय सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

क्या है कान्याखेड़ी परियोजना

कान्याखेड़ी मध्यम सिंचाई परियोजना आष्टा क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण सिंचाई परियोजना है, जिसे 222 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्राप्त हुई है। परियोजना की जल भराव क्षमता 18.008 मि. घन मीटर है तथा इसके माध्यम से लगभग 3,800 हेक्टेयर कृषि भूमि को सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। इसके साथ ही नागरिकों को पेयजल भी उपलब्ध होगा। परियोजना के पूर्ण होने पर अरनिया गाजी, भंवरी, गाजीखेड़ी, हाजीपुर, हरनिया, कल्याणपुर, कान्याखेड़ी, कर्मनखेड़ी, कुरावर, टिगरिया एवं केशोपुर सहित आसपास के ग्रामों के किसानों को सिंचाई का लाभ मिलेगा, जिससे कृषि उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ क्षेत्र में जल संरक्षण और ग्रामीण विकास को भी नई गति मिलेगी।

रिमझिम फुहारों के बीच जिले को हरा-भरा बनाने के लिए बिखेरी गई हरियाली की गेंदें

- कमिश्नर श्रीकांत बनोठ एवं कलेक्टर सोमेश मिश्रा के नेतृत्व में जिलेभर में हुआ वृहद सीड बॉल प्रसार से नवांकुर का प्रारंभ
- हासलपुर में बच्चों के साथ कमिश्नर एवं कलेक्टर ने नवांकुर अभियान में की सहभागिता

नर्मदापुरम (निप्र)। प्राकृतिक वनीकरण को बढ़ावा देने और जिले को अधिक हरित एवं पर्यावरण अनुकूल बनाने के उद्देश्य से मंगलवार को नवांकुर अभियान के अंतर्गत जिलेभर में सीड बॉल का व्यापक स्तर पर प्रसार किया गया। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के नेतृत्व में यह अभियान जिले की सभी जनपद पंचायतों, तहसीलों एवं नगरीय निकायों में एक साथ संचालित किया गया। इस अवसर पर संभाग आयुक्त श्री श्रीकांत बनोठ, जनपद पंचायत नर्मदापुरम के अध्यक्ष श्री भूपेंद्र चौकसे, मध्य प्रदेश तैराकी संघ के अध्यक्ष श्री पीयूष शर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे। सीडबॉल प्रक्षेपण कार्यक्रम के दौरान कमिश्नर श्री श्रीकांत बनोठ ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण एवं जिले में प्राकृतिक वनीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा प्रारंभ की गई है पहल निश्चित रूप से कारगर साबित होगी। उन्होंने कहा कि संभाग के अन्य जिले भी इस पहल से प्रेरित होकर ऐसे नवाचार प्रारंभ करेंगे। उन्होंने कहा कि सीड बॉल से वृक्षारोपण के तहत सफलता प्रतिशत भी अच्छा होता है जिससे बीजों के पनपने की संभावना भी बढ़ जाती है। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने जनपद पंचायत नर्मदापुरम के ग्राम हासलपुर में आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता करते हुए बच्चों, जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं ग्रामीणों के साथ सीड बॉल का प्रसार किया। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक वनों के संरक्षण एवं विस्तार के लिए जनसहभागिता अत्यंत आवश्यक है। सीड बॉल तकनीक के माध्यम से ऐसे क्षेत्रों में भी वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जा सकता है, जहां पारंपरिक तरीके से पौधरोपण करना कठिन होता है। 'बीज से वृक्ष तक' के संकल्प के साथ विश्व पर्यावरण दिवस से प्रारंभ हुए नवांकुर अभियान के अंतर्गत जिले में अब तक 2 लाख से अधिक सीड बॉल का निर्माण देशी एवं स्थानीय वृक्ष प्रजातियों के बीजों को चिकनी मिट्टी और गोबर खाद अथवा कम्पोस्ट के मिश्रण से किया गया। जो अब जिले भर में वन घनत्व बढ़ाने में उपयोग किए जा रहे हैं।

बच्चों से पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेने का आह्वान

कलेक्टर श्री मिश्रा ने बच्चों से पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेने का आह्वान करते हुए कहा कि आज बिखेरी गई ये सीड बॉल भविष्य में हजारों नए वृक्षों का रूप लेकर जिले को हरियाली से आच्छादित करेंगी। उन्होंने सभी नागरिकों से पर्यावरण संरक्षण को जनआंदोलन बनाने तथा अधिक से अधिक लोगों को इस अभियान से जोड़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि जिले में यह अभियान आगे भी सतत रूप से चालू रहेगा एवं सीड बॉल का प्रक्षेपण कर पर्यावरण संरक्षण के इस पुनीत कार्य को किया जाएगा। नवांकुर अभियान के तहत जिलेभर में स्थानीय एवं देशी प्रजातियों के बीजों से तैयार सीड बॉल का प्रसार कर नर्मदांचल को हरियाली की चादर ओढ़ने का कार्य शुरू किया गया। अभियान में विभिन्न विभागों के अधिकारियों-कर्मचारियों, जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, विद्यार्थियों एवं आमजन ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। अभियान का उद्देश्य प्राकृतिक वनीकरण को बढ़ावा देना, जैव विविधता का संरक्षण करना तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ एवं हरित पर्यावरण सुनिश्चित करना है।

संक्षिप्त समाचार

निजी सुरक्षा एजेंसियों के लाइसेंस एवं चरित्र सत्यापन की प्रक्रिया में तेजी के निर्देश

रायसेन (निप्र)। प्रदेश में निजी सुरक्षा एजेंसियों के लाइसेंस एवं नवीनीकरण से संबंधित आवेदनों के त्वरित निराकरण तथा चरित्र सत्यापन की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और समयबद्ध बनाने के लिए गृह विभाग ने पुलिस अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए हैं। सचिव गृह श्रीमती कृष्णावेणी देसावतु ने बताया कि प्राइवेट सुरक्षा अभिकरण (विनियमन) अधिनियम, 2005 के अंतर्गत नए लाइसेंस के लिए प्राप्त आवेदनों का निराकरण निर्धारित 60 दिवस की समय-सीमा में तथा लाइसेंस नवीनीकरण के आवेदनों का निराकरण 30 दिवस की समय-सीमा में किया जाना है। इसी प्रकार, जांच उपरांत प्रतिवेदन 15 दिवस के भीतर संबंधित कार्यालय को भेजे जाने के निर्देश हैं। उन्होंने बताया कि निजी सुरक्षा एजेंसियों से संबंधित आवेदनों के निराकरण में अनावश्यक विलंब को रोकने के लिए सभी संबंधित अधिकारियों को निर्धारित समय-सीमा का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। गृह विभाग द्वारा की गई समीक्षा में कुछ जिलों में जांच प्रतिवेदन लंबे समय से लंबित पाए गए थे। इस पर संबंधित अधिकारियों को लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण करने तथा भविष्य में समय-सीमा का अनिवार्य रूप से पालन करने के निर्देश दिए गए हैं। जांच प्रक्रिया को बनाया जाएगा अधिक व्यवस्थित निजी सुरक्षा एजेंसियों के आवेदकों के चरित्र एवं कार्यालय सत्यापन की प्रक्रिया को भी सुव्यवस्थित किया गया है। संबंधित एजेंसी के कार्यालय का भौतिक सत्यापन कराए जाने तथा आवेदक के चरित्र संबंधी सत्यापन की जांच CCTNS एवं ICJS के माध्यम से किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। श्रीमती कृष्णावेणी देसावतु ने यह भी बताया कि जांच प्रक्रिया में अनावश्यक विलंब को रोकने के लिए आवेदक को केवल आवश्यक होने पर ही उपस्थित होने के लिए बुलाया जाए तथा अनावश्यक रूप से किसी प्रकरण को लंबित न रखा जाए।गृह विभाग ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि निजी सुरक्षा एजेंसियों से संबंधित जांच प्रक्रिया में अनावश्यक विलंब न हो और निर्धारित समय-सीमा में प्रतिवेदन अनिवार्य रूप से प्रेषित किया जाए।

आबकारी विभाग की देर रात तक कार्रवाई, अवैध मदिरा के 4 प्रकरण दर्ज

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के अवैध मदिरा परिवहन, विनिर्माण एवं संग्रहण के विरुद्ध सख्त कार्रवाई के निर्देशों पर आबकारी विभाग ने गत दिवस बड़ी कार्रवाई की। जिला आबकारी अधिकारी डॉ. राजीव प्रसाद द्विवेदी के मार्गदर्शन और मण्डल प्रभारी अधिकारी अभिलाष पाठक के नेतृत्व में वृत्त इटारसी शहर की टीम ने रोड गस्त, वाहन तलाशी और ढाबों की सघन जांच की। इस दौरान मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम, के अंतर्गत 4 प्रकरण पंजीबद्ध किए गए। टीम ने शहर की मदिरा दुकानों का औचक निरीक्षण कर टेस्ट परचेज की कार्रवाई भी की। इसके साथ ही अवैध आहातों और सार्वजनिक स्थानों पर मदिरापान करने वाले लोगों के खिलाफ भी कार्रवाई की गई। पूरी कार्रवाई देर रात तक चलती रही। कार्यक्रम में आबकारी उप निरीक्षक के. के. पडरिया, मुख्य आरक्षक राजेश गौर, दुर्गेश पाठरिया और आरक्षक धर्मेंद्र बारंगे का सहयोग सराहनीय रहा। आबकारी विभाग ने स्पष्ट किया है कि अवैध मदिरा के खिलाफ यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।

किसानों को निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करें, सिंचाई कार्य प्रभावित नहीं होने चाहिए: कलेक्टर अंशुल गुप्ता

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने ऊर्जा विभाग के अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि जिले में किसानों के सिंचाई कार्यों के लिए विद्युत आपूर्ति किसी भी स्थिति में बाधित नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि खरीफ सीजन के दौरान खेतों में सिंचाई का कार्य तेज गति से चल रहा है, ऐसे समय में निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। कलेक्टर श्री गुप्ता ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि विद्युत वितरण व्यवस्था की लगातार निगरानी की जाए तथा जहां भी तकनीकी खराबी, लाइन फॉल्ट या ट्रांसफार्मर संबंधी समस्या सामने आए, उसका तत्काल निराकरण किया जाए। उन्होंने कहा कि किसानों को सिंचाई के लिए निर्धारित समय पर पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण बिजली उपलब्ध कराई जाए, ताकि फसलों की सिंचाई में किसी प्रकार की परेशानी न आए।

अंत्येष्टि सहायता में लापरवाही पर सचिव को निलंबित और रोजगार सहायक की सेवा समाप्त करने के निर्देश

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने बुधवार को प्रभातपट्टन विकासखंड के ग्राम गेहूंबारसा का भ्रमण कर पंचायत भवन में ग्रामीणों से आत्मीय संवाद किया। उन्होंने पेयजल, शिक्षा, बिजली, सड़क एवं अन्य जनसमस्याओं की जानकारी लेकर संबंधित अधिकारियों को उनका त्वरित निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। ग्रामीणों ने पेयजल आपूर्ति में आ रही समस्याओं से अवगत कराया, जिस पर कलेक्टर ने संबंधित विभाग को तत्काल समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। घोघरी परियोजना से शीघ्र ही ग्राम में पानी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी। एक ग्रामीण की अंत्येष्टि सहायता राशि तीन माह से लंबित पाए जाने पर उन्होंने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित सचिव को निलंबित करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही जिन बुजुर्गों और बच्चों का ई-केवाईसी लंबित है, उनका अभियान चलाकर शीघ्र समाधान करने के निर्देश भी अधिकारियों को दिए। कलेक्टर डॉ सोनवणे ने ग्राम पंचायत की विकास कार्ययोजना के अनुरूप स्वीकृत कार्य प्रारंभ नहीं किए जाने पर संबंधित उपयंत्री को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

छात्रावास और स्कूल का निरीक्षण, गुणवत्ता पर जताई नाराजगी

भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने छात्रावास एवं माध्यमिक शाला का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने छात्रावास की नवीन इमारत शुरू होने में हो रही देरी पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि इससे विद्यार्थियों को अनावश्यक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। निरीक्षण में नवीन छात्रावास भवन की निर्माण गुणवत्ता भी संतोषजनक नहीं मिलने पर उन्होंने छात्रावास अधीक्षक को हटाने तथा संबंधित ठेकेदार को ब्लैकलिस्ट करने के लिए नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। साथ ही छात्रावास तक पहुंच मार्ग को सीसी रोड से विकसित करने के भी निर्देश दिए। कलेक्टर डॉ सोनवणे ने माध्यमिक शाला का निरीक्षण कर विद्यार्थियों से आत्मीय संवाद किया और उनकी शैक्षणिक गुणवत्ता का आकलन किया। बच्चों की आधारभूत शिक्षा (फाउंडेशन लर्निंग) अपेक्षित स्तर से कमजोर पाए जाने पर उन्होंने शिक्षकों को नियमित अभ्यास और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों की बुनियादी शिक्षा मजबूत करने के निर्देश दिए।

स्कूल व आंगनवाड़ी केन्द्र में विधिक साक्षरता व जागरूकता कार्यक्रम सम्पन्न

हरदा (मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश व अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हरदा श्री अरविंद रघुवंशी के निर्देशानुसार तथा न्यायाधीश व सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री चन्द्रशेखर राठौर के मार्गदर्शन में मंगलवार को एल.एन. पालीवाल हायर सेकेंडरी स्कूल रहटगांव व आंगनवाड़ी केन्द्र, नजरपुरा में विधिक साक्षरता एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम में उपस्थित जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री सौरभ कुमार दुबे ने विद्यार्थियों को पॉक्सो अधिनियम, नशे के दुष्परिणाम, भारतीय संविधान, मौलिक कर्तव्य तथा शिक्षा के अधिकार एवं महत्व के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की। विद्यार्थियों को बताया गया कि संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों के साथ-साथ प्रत्येक नागरिक का अपने मौलिक कर्तव्यों का पालन करना भी आवश्यक है। साथ ही छात्र/ छात्राओं एवं ग्रामीणजनों को उनके कानूनी अधिकारों एवं नालसा/सालसा की निःशुल्क विधिक सहायता योजनाओं एवं शासकीय कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई एवं उन्हें नशे की लत से दूर रहने तथा नषा मुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में डिप्टी चीफ, लीगल एड डिफेंस काउंसिल श्री अनीस मोहम्मद खान ने उपस्थिजनों को महिलाओं के अधिकार, बच्चों के अधिकार, बच्चों की शिक्षा, घरेलू हिंसा से संरक्षण अधिनियम, पीड़ित प्रतिकर योजना तथा नालसा की गरीबी उन्मूलन एवं कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में जानकारी दी। कार्यक्रम में उपस्थितजनों को राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण की टोल फ्री हेल्पलाइन 15100 की जानकारी देते हुए बताया गया कि आर्थिक रूप से कमजोर एवं पात्र व्यक्तियों को विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है। साथ ही जनहित याचिका, लोक उपयोगी लोक अदालत एवं वैकल्पिक विवाद समाधान की उपयोगिता के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गई। इस अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य पर्यावरण को हरा-भरा एवं स्वस्थ बनाना है। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों से कानून के प्रति जागरूक रहने, बच्चों एवं महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने तथा किसी भी विधिक सहायता की आवश्यकता होने पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हरदा से संपर्क करने का आग्रह किया गया। शिविर में, विद्यालय के शिक्षकगण, छात्र/छात्राएं, ग्रामीणजन तथा पैरालीगल वालेंटियर श्री शौकत खान एवं श्री अमजद खान उपस्थित रहे।

आंगनवाड़ी केंद्रों का किया निरीक्षण

विदिशा (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग की उप संचालक श्रीमती विनीता लोढ़ा ने मंगलवार को शमशाबाद एवं बिछिया क्षेत्र के विभिन्न आंगनवाड़ी केंद्रों का निरीक्षण कर केंद्रों की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने बच्चों को प्रदान की जा रही शैक्षणिक गतिविधियों, पोषण आहार वितरण, स्वच्छता व्यवस्था, अभिलेखों के संधारण तथा केंद्रों में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं का बारीकी से अवलोकन किया। उप संचालक श्रीमती लोढ़ा ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं से केंद्रों की नियमित गतिविधियों, बच्चों की उपस्थिति, गर्भवती एवं धात्री माताओं को दी जा रही सेवाओं तथा पोषण पुनर्वास संबंधी कार्यों की जानकारी प्राप्त की।

सालबर्डी धाम को प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा : कलेक्टर डॉ. सोनवणे

कलेक्टर ने सालबर्डी शिव धाम में बाबा भोलेनाथ का जलाभिषेक कर लिया आशीर्वाद, पांडव कचहरी गुफा का भी किया निरीक्षण

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने बुधवार को प्रभातपट्टन विकासखंड के विभिन्न ग्रामों के भ्रमण के दौरान सुप्रसिद्ध सालबर्डी धाम पहुंचकर गुफा मंदिर में भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक कर आशीर्वाद लिया। उन्होंने मंदिर के पुजारी से सालबर्डी धाम की धार्मिक मान्यताओं, इतिहास एवं सांस्कृतिक महत्व की जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात गुफा स्थित माता मंदिर में दर्शन कर पूजा-अर्चना की। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने पंचायत, राजस्व एवं संबंधित विभागों के अधिकारियों को सालबर्डी धाम का विस्तृत सर्वे एवं ट्रैकिंग कर इसे प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए बेहतर आवागमन, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था तथा आवश्यक आधारभूत सुविधाएं विकसित करने पर विशेष जोर दिया। इस अवसर पर तहसीलदार श्री यशवंत गिन्नारे सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

पांडव कचहरी गुफा का भी किया अवलोकन

कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने सालबर्डी स्थित ऐतिहासिक पांडव कचहरी गुफा का भी अवलोकन किया और परिसर के संरक्षण एवं नियमित रखरखाव के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। उल्लेखनीय है कि पांडव कचहरी (शिव मंदिर) का निर्माण लगभग 13वीं-14वीं शताब्दी ईस्वी का माना जाता है। स्थानीय लोग इसे पांडवों की कचहरी, जबकि जनजातीय समाज गोंड राजा की कचहरी के नाम से भी जानता है। मंदिर की स्थापत्य शैली में वर्गाकार गर्भगृह तथा स्तंभों पर आधारित मंडप निर्मित है। गर्भगृह का प्रवेश द्वार कलात्मक रूप से अलंकृत है, जिसके ललाट बिंब पर भगवान गणेश का अंकन किया गया है। यह प्राचीन मंदिर मध्य प्रदेश पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित स्मारक है। निरीक्षण के दौरान एसडीएम मुलताई श्री राजीव कहार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखने के दिए निर्देश

कलेक्टर ने आष्टा में औद्योगिक इकाइयों का किया निरीक्षण

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने आष्टा स्थित सात्विक एग्रो आटा प्लांट तथा रेलिश फ़ूड दलिया एवं सॉर्टेक्स प्लांट का निरीक्षण कर वहां संचालित उत्पादन प्रक्रियाओं, गुणवत्ता मानकों एवं आधुनिक तकनीकों का अवलोकन किया। उन्होंने प्लांट में उपयोग की जा रही मशीनरी, उत्पादन क्षमता तथा गुणवत्ता नियंत्रण व्यवस्थाओं की जानकारी भी ली। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने प्लांट की स्वच्छता, सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली एवं गुणवत्ता मानकों की सराहना करते हुए इनके निरंतर पालन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों में गुणवत्ता और स्वच्छता बनी रहनी चाहिए, जिससे उपभोक्ताओं को बेहतर उत्पाद उपलब्ध हो सकें तथा जिले की औद्योगिक पहचान मजबूत हो। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने संचालकों को निर्देश दिए कि उत्पादन इकाइयों में सुरक्षा मानकों का पूर्णतः पालन सुनिश्चित किया जाए तथा कर्मचारियों को समय-समय पर आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाए।

उन्होंने कहा कि स्थानीय किसानों से अधिकाधिक कृषि उत्पादों का क्रय कर उन्हें बेहतर बाजार उपलब्ध कराया जाए, जिससे किसानों की आय में वृद्धि हो सके। साथ ही प्लांट परिसर में स्वच्छता, जल संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण संबंधी गतिविधियों को भी प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। प्लांट के संचालकों ने कलेक्टर को उत्पादन क्षमता, गुणवत्ता नियंत्रण, आधुनिक मशीनरी तथा किसानों एवं स्थानीय रोजगार से जुड़े विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इकाइयों में आधुनिक तकनीकों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। कलेक्टर ने कहा कि जिले में स्थापित ऐसे आधुनिक उद्योग औद्योगिक विकास को गति देने के साथ-साथ स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी सृजित कर रहे हैं। उन्होंने उद्योगों को शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ लेकर विस्तार करने तथा अधिक से अधिक रोजगार सृजित करने के लिए प्रोत्साहित किया। निरीक्षण के दौरान जिला उद्योग केंद्र के महाप्रबंधक श्री अनुराग वर्मा, श्री मनोज जैन, श्री विकास जैन, श्री संजय जैन, श्री विजय जैन तथा श्री अभिनव जैन उपस्थित रहे।

भोपाल में बारिश, 5 जिलों में हैवी रेन का अलर्ट

मप्र में अब तक औसतन 12.8 इंच पानी गिरा; टीकमगढ़ में 24 घंटे में डेढ़ इंच बारिश

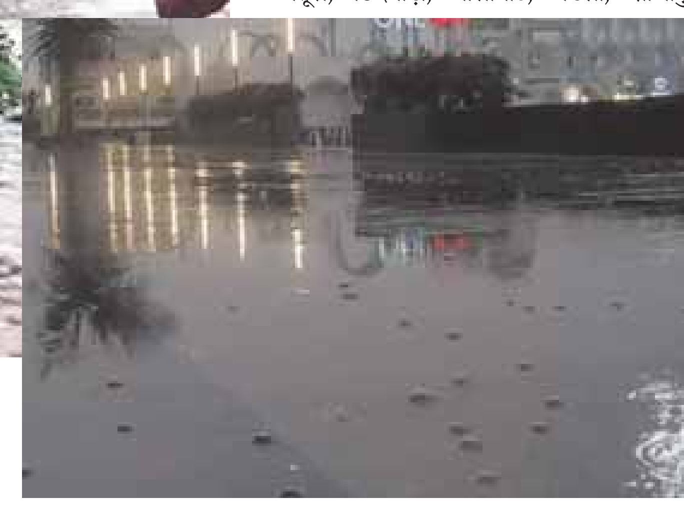

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में मानसून एक बार फिर सक्रिय हो गया है। मौसम विभाग ने शुक्रवार को श्योपुर, मंदसौर, रतलाम, आलीराजपुर और पन्ना में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। इन जिलों में 24 घंटे के दौरान 4 इंच तक बारिश हो सकती है। शुक्रवार दोपहर को भोपाल में कई इलाकों में पानी गिरा।

भोपाल, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, विदिशा, इंदौर, धार, झाबुआ, बड़वानी, खरगोन, खंडवा, उज्जैन, देवास, आगर-मालवा, शाजापुर, नर्मदापुरम, हरदा, बैतूल, ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी, रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली, शहडोल, उमरिया, सागर, दमोह, छतरपुर, टीकमगढ़ और निवाड़ी सहित 50 से अधिक जिलों में हल्की से मध्यम बारिश के आसार हैं।

मैहर जिले के भदनपुर में सड़क पार करते समय पहली कक्षा का छात्र ऋषभ साकेत (5) तेज बारिश के बहाव में बहने लगा। मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने उसे बचाया। घटना का वीडियो भी सामने आया है।

इससे पहले गुरुवार को 25 से अधिक जिलों में बारिश का दौर रहा। सबसे ज्यादा डेढ़ इंच बारिश टीकमगढ़ में हो गई। रतलाम, छतरपुर, श्योपुर, धार, नर्मदापुरम, शिवपुरी, सीधी, इंदौर, उज्जैन, उमरिया, जबलपुर, रायसेन, राजगढ़, सागर, सतना, भोपाल, बैतूल, छिंदवाड़ा, बालाघाट, मंडला, शाजापुर, सीहोर, विदिशा, देवास समेत कई जिलों में कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश का दौर जारी रहा।

सामान्य से 10 प्रतिशत कम बारिश

मध्य प्रदेश में 24 जून को मानसून ने दस्तक दी थी, तब से अब तक औसतन 12.8 इंच (325.1 मिमी) बारिश दर्ज की गई है। हालांकि, यह सामान्य से करीब 10 प्रतिशत कम है। मौसम विभाग के मुताबिक, इस समय तक 14.1 इंच (359.6 मिमी) बारिश हो जानी चाहिए थी।

तीन दिन में बारिश की कमी लगातार घटी है। 20 जुलाई तक जहां बारिश सामान्य से 17 प्रतिशत कम थी, वहीं अब यह घटकर 10 प्रतिशत रह गई है। पूर्वी मध्य प्रदेश में 13 प्रतिशत और पश्चिमी हिस्से में 6 प्रतिशत कम बारिश दर्ज की गई है।

मौसम विशेषज्ञ शैलेंद्र कुमार नायक का कहना है कि जुलाई के आखिरी सप्ताह में प्रदेश में तेज बारिश का दौर बना रहेगा।

प्रदेश के 14 जिलों में तस्वीर बेहतर

प्रदेश के 15 जिलों में बारिश का आंकड़ा प्लस और 41 जिलों में माइनस में है। पूर्वी हिस्से में निवाड़ी ही ऐसा जिला है, जहां औसत से ज्यादा पानी गिरा है। कम बारिश वाले 41 जिलों में अनूपपुर, बालाघाट, छतरपुर, छिंदवाड़ा, दमोह, डिंडौरी, जबलपुर, कटनी, मैहर, मंडला, मऊगंज, नरसिंहपुर, पांढुर्णा, पन्ना, रीवा, सागर, सतना, सिवनी, शहडोल, सीधी, सिंगरौली, टीकमगढ़, उमरिया, आलीराजपुर, अशोकनगर, बड़वानी, बैतूल, दतिया, धार, गुना, ग्वालियर, झाबुआ, मुरैना, मंदसौर, नर्मदापुरम, रायसेन, रतलाम, शाजापुर, श्योपुर, शिवपुरी और विदिशा शामिल हैं।

वहीं, ज्यादा बारिश वाले 14 जिले- निवाड़ी, आगर-मालवा, भिंड, भोपाल, बुरहानपुर, देवास, हरदा, इंदौर, खंडवा, खरगोन, नीमच, राजगढ़, सीहोर और उज्जैन है।

ट्रक ने श्रद्धालुओं की टवेरा को रौंदा, महिला की मौत

11 लोग थे सवार, बच्चे समेत कई घायल, बनारस से एमपी घूमने आया था परिवार

खंडवा (नप्र)। खंडवा में इंदिरा सागर बांध के सामने जगमूर्ति सेतु के पास शुक्रवार को राखड़ (फ्लाईऐश) से भरे तेज रफ्तार ट्रक ने श्रद्धालुओं से भरी टवेरा गाड़ी को टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि टवेरा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। वाहन में सवार लोग अंदर ही फंस गए। हादसे में एक महिला की मौत हो गई, जबकि बच्चे समेत कई लोग घायल हो गए। चार घायलों की हालत गंभीर बताई जा रही है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। स्थानीय लोगों और पुलिस ने काफी मशक्कत के बाद टवेरा में फंसे श्रद्धालुओं को बाहर निकाला। ड्राइवर को दरवाजा तोड़कर बाहर निकाला गया। घायलों को पहले इंदिरा सागर बांध स्थित अस्पताल ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद सभी को पुनासा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रेफर किया गया। यहां से गंभीर रूप से घायल एक मासूम बालक और एक महिला को खंडवा जिला अस्पताल भेजा गया। बच्चे को आईसीयू में भर्ती कराया गया। वहीं इलाज के दौरान एक महिला की मौत हो गई।

- **सेल्फी लेकर लौट रहे थे, तभी हुआ हादसा-** परिजनों के अनुसार, सभी श्रद्धालु उत्तर प्रदेश के बनारस के रहने वाले हैं और धार्मिक यात्रा पर निकले थे। वे ट्रेन से पहले उज्जैन पहुंचे, जहां महाकाल ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए। इसके बाद उज्जैन से किराए पर टवेरा लेकर ओंकारेश्वर पहुंचे। वहां नर्मदा स्नान और ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के बाद सभी सीहोर स्थित कुबेरेश्वर धाम जा रहे थे। रास्ते में इंदिरा सागर बांध का दृश्य देखकर परिवार जगमूर्ति सेतु के पास फोटो और सेल्फी लेने के लिए रुका। फोटो खिंचवाने के बाद जैसे ही सभी टवेरा में बैठे और वाहन आगे बढ़ा, सामने से आए राखड़ से भरे तेज रफ्तार ट्रक ने टक्कर मार दी।

टवेरा में सवार थे ये श्रद्धालु

हादसे के समय टवेरा में बृजलाल, कन्हैयालाल, ममता देवी, रीना देवी, कलावती, तूलिका, अमित, गरिमा, ईशान, आरोही और संजय प्रसाद सहित बनारस निवासी श्रद्धालु सवार थे। सभी घायलों को अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया है।

ट्रक चालक बोला- ब्रेक फेल हो गए थे- हादसे की सूचना मिलते ही नर्मदानगर पुलिस मौके पर पहुंची और रेस्क्यू शुरू कराया। दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को हटाकर यातायात बहाल किया गया। पुलिस ने ट्रक जब्त कर लिया है।प्रारंभिक पूछताछ में ट्रक चालक ने बताया कि ट्रक के ब्रेक फेल हो गए थे, जिससे वाहन अनियंत्रित हो गया। उधर, खंडवा जिला अस्पताल में मृतका के शव का पोस्टमार्ट्म कराकर परिजनों को सौंपने की प्रक्रिया चल रही है। घायलों का इलाज जारी है।

उज्जैन में दिनदहाड़े बुजुर्ग को गोली मारी

टॉवर चौक पर हुई घटना, आरोपी गिरफ्तार; भागने के दौरान हुआ घायल

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन के व्यस्त टॉवर चौक क्षेत्र में शुक्रवार दोपहर एक बुजुर्ग को गोली मार दी गई। गोली लगने से घायल बुजुर्ग को तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया। वारदात के कुछ ही देर बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस से बचकर भागने के दौरान आरोपी घायल हो गया, जिसके बाद उसे भी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

पुलिस के अनुसार प्रभुलाल मालवीय (50) ने अब्दालपुरा निवासी आशुतोष सोनी पर टॉवर चौक पर गोली चलाई। गोली आशुतोष के पेट में लगी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास मौजूद लोगों ने तत्काल उन्हें अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका उपचार जारी है।

टोल नाके के पास पकड़ा गया आरोपी

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने शहरभर में नाकाबंदी कर आरोपी की तलाश शुरू की। कुछ ही देर बाद देवास गेट थाना क्षेत्र के हरिओम टोल नाके के पास आरोपी प्रभुलाल मालवीय को घेराबंदी कर पकड़ लिया गया। इस दौरान उसने भागने का प्रयास किया, जिसमें वह घायल हो गया। फिलहाल आरोपी का भी सरकारी अस्पताल में इलाज चल रहा है।

पूछताछ में कही यह बात

प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने पुलिस को बताया कि आशुतोष सोनी उसे लंबे समय से परेशान कर रहा था, इसी कारण उसने उस पर गोली चलाई। आरोपी ने यह भी दावा किया कि वह तीन-चार अन्य लोगों को भी गोली मारने वाला था।

आरोपी की मानसिक स्थिति की जांच

सीएसपी दीपिका शिंदे ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। प्रारंभिक पूछताछ के दौरान उसकी मानसिक स्थिति सामान्य नहीं लग रही है।

पुलिस सभी पहलुओं की जांच कर रही है और आरोपी से पूछताछ जारी है। पुलिस ने घटना में प्रयुक्त हथियार भी जब्त कर लिया है। फिलहाल हमले के पीछे के वास्तविक कारणों और आरोपी के दावों की जांच की जा रही है।

अचानक लगा सीएम के काफिले में ब्रेक

- **चूल्हे के पास पहुंचकर खुद उबालने लगे चाय, मोहन यादव को ऐसे देखकर दुकानदार हैरान**

धार (नप्र)। मौसम खराब होने की वजह से सीएम मोहन यादव अलीराजपुर सड़क मार्ग से गए थे। सड़क मार्ग से लौटने के दौरान अलीराजपुर-इंदौर मार्ग स्थित एक चाय दुकान पर उनका काफिला अचानक से रुक गया। इसके बाद सीएम मोहन यादव चाय की दुकान में पहुंच गए। यह देखकर वहां के लोग हतप्रभ रह गए।

सीएम ने बनाई चाय- चाय की दुकान धार जिले के राजगढ़ में थी। सीएम मोहन यादव दुकान के अंदर पहुंचकर लोगों से बातचीत शुरू कर दी। बातचीत करते-करते वह वहां, पहुंच गए जहां चाय बन रही थी। इस दौरान दौरान सीएम लोगों से बात करते-करते खुद ही चाय बनाने लग जाते हैं। मोहन यादव की सौम्यता देखकर लोग हैरान थे।

सीएम ने लोगों से की बात- सीएम मोहन यादव लगातार वहां के लोगों और

व्यवसाय कर रहे लोगों से बातचीत कर रहे थे। उन्हें प्रदेश में चल रही व्यवस्था और उनकी जिंदगी के बारे में भी चर्चा की है। दुकान मालिक से पूछा कि उनका कारोबार कैसा चल रहा है। लोग भी अपनी बात सीएम के सामने बेबाकी के साथ रख रहे थे। चाय पीने के बाद सीएम मोहन यादव वहां से निकल गए।

अलीराजपुर गए थे सीएम मोहन यादव- दरअसल, सीएम मोहन यादव 23 जुलाई को अलीराजपुर गए थे। वह जिले में चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर आयोजित समारोह में शामिल होने गए थे। मौसम खराब होने की वजह से पायलट ने हेलीकॉप्टर उड़ाने से मना कर दिया था। इसके बाद सीएम रोड से जाने का फैसला किया था।

पहली बार देखा सामने- सीएम को सामने देखकर दुकानदार और उनके स्टॉफ भौंचक्क थे। उन लोगों ने कहा कि अभी तक सीएम मोहन यादव को टीवी पर भी देखते रहे हैं। पहली बार सीएम को सामने से देखा है। गौरतलब है कि सीएम मोहन यादव अक्सर लोगों से जुड़ने के लिए ऐसा करते रहते हैं। वह उज्जैन में भी कई बार पैदल या बाइक से निकल जाते हैं। किसी दुकान या मार्केट में खड़े होकर लोगों से संवाद करते हैं। भोपाल में खुद से फल की खरीदारी करने भी निकल जाते हैं।

30 जुलाई को बीजेपी की अग्निपरीक्षा

उपचुनाव में विपक्ष हारा तो निकलेगी सीजेपी आंदोलन की हवा

दतिया/बडोदरा (नप्र)। मध्य प्रदेश की दतिया विधानसभा सीट के लिए 30 जुलाई को मतदान होगा और 3 अगस्त को रिजल्ट घोषित किए जाएंगे। इस दिन गुजरात की मांजलपुर और बिहार की बांकीपुर विधानसभा सीटों का परिणाम आएगा। उपचुनाव सिर्फ विधानसभा सीटों पर है, मगर बीजेपी समेत राष्ट्रीय राजनीति के लिए खास होने वाला है। इन तीनों सीटों पर वोटिंग ऐसे समय में हो रही है, जब दिल्ली समेत देश के कई हिस्सों में सीजेपी का आंदोलन चल रहा है। नीट पेपर लीक का मुद्दा गरम है और कांग्रेस समेत गैर बीजेपी दल अग्रेसिव मोड में है। संसद से सड़क तक आंदोलन की चर्चा हो रही है। ऐसे राजनीतिक माहौल में अगर बीजेपी की एक भी सीट पर हार होती है तो इसकी चर्चा पूरे भारत में होगी।

दतिया उपचुनाव सीएम मोहन यादव के लिए चुनौती- सियासी हलकों में यह माना जा रहा है कि दतिया में जीत न सिर्फ सीएम मोहन यादव, बल्कि पूरी पार्टी के लिए महत्वपूर्ण है। अगर बीजेपी दतिया सीट से हार जाती है तो मध्य प्रदेश के साथ पूरे देश की

राजनीति का टर्निंग पॉइंट बन सकता है। सीजेपी आंदोलन के बीच दतिया उपचुनाव में कांग्रेस की जीत से ज्यादा बीजेपी की हार की चर्चा होगी। विपक्ष को भी नया नैरेटिव मिल जाएगा। बीजेपी ने दतिया में जीत के लिए पूरी ताकत झोंक रखी है। आलम यह है कि टिकट कटने से नाराज पूर्व मंत्री नरोत्तम मिश्रा अब आशुतोष तिवारी के लिए मैदान में जी-जान लगा रहे हैं।

मांजलपुर और बांकीपुर में भी बीजेपी कड़ी टक्कर में- गुजरात की मांजलपुर विधानसभा में बीजेपी का मुकाबला कांग्रेस से है। यहां बीजेपी ने सतीश पटेल को टिकट दिया है, जबकि कांग्रेस ने बडोदरा की राजनीति के बड़े चेहरे भीखाभाई रबारी को मैदान में उतारा है। भीखाभाई 1975 से 1985 तक विधायक रहे हैं। फिलहाल चार दशक से मांजुलपुर बीजेपी का गढ़ रहा है। यह सीट बीजेपी नेता योगेश पटेल के निधन से खाली हुई थी।

बीजेपी के सामने इसे दोबारा हासिल करने की चुनौती है। बिहार की बांकीपुर विधानसभा सीट पर भी 3 अगस्त को ही रिजल्ट आएगा। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के इस्तीफे से खाली हुई सीट पर भी कड़ा मुकाबला है।

कांग्रेस विधायक की अयोग्यता से खाली हुई थी दतिया सीट

सीजेपी आंदोलन के दौरान 3 बीजेपी शासित राज्यों के 3 विधानसभाओं में उपचुनाव हो रहे हैं। 30 जुलाई को जिन तीन विधानसभा सीटों के लिए मतदान होना है, वहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। मध्य प्रदेश, गुजरात और बिहार में बीजेपी लंबे समय से सत्ता में रही है। मध्य प्रदेश में दतिया विधानसभा सीट पर बीजेपी ने अपने कद्दावर नेता नरोत्तम मिश्रा का टिकट काटकर नए ब्राह्मण चेहरे आशुतोष तिवारी को मुकाबले में उतारा है। यहां से कांग्रेस के घनश्याम सिंह पार्टी के लिए सीट बचाने के लिए मैदान में हैं। मध्य प्रदेश की दतिया विधानसभा सीट कांग्रेस विधायक राजेंद्र भारती की विधानसभा सदस्यता समाप्त होने के कारण खाली हुई है। राजेंद्र भारती को अदालत ने 1998 के एक पुराने बैंक धोखाधड़ी मामले में तीन साल की सजा सुनाई थी।

सुबह योग, शाम को हार्ट-अटैक से भाजपा नेता की मौत

खंडवा (नप्र)। खंडवा जिला कोर्ट के क्रिमिनल लॉयर और भाजपा विधि प्रकोष्ठ के जिला सह-संयोजक विजय चौधरी (42) की हार्ट अटैक से मौत हो गई। हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी निवासी विजय को पहले एसिडिटी और सीने में हलकी तकलीफ महसूस हुई, जिसे सामान्य समझकर वे बाइक चलाकर नजदीकी निजी अस्पताल पहुंचे थे, लेकिन ईसीजी जांच के दौरान ही उनकी सांसें थम गईं।

शाम को मंदिर जाने का था प्लान- करीबी दोस्त और एडवोकेट देवेंद्र यादव ने बताया कि गुरुवार को विजय दोस्तों के साथ मॉर्निंग वॉक पर गए थे, जहां सबने मिलकर योग किया। शाम करीब 6 बजे विजय ने दोस्तों को फोन कर बताया था कि एसिडिटी के कारण वे अस्पताल जा रहे हैं। इसके एक घंटे बाद उनकी मौत की खबर आ गई। दोस्तों के मुताबिक, शाम को वे दादाजी मंदिर जाने, बॉम्बे बाजार में दूध-जलेबी खाने और 7 अगस्त को काशी विश्वनाथ (बनारस) दर्शन की योजना बनी थी, जिसके लिए रिजर्वेशन भी हो चुका था।

जहरीली मक्का खाने से 5 मोरों की मौत

फसल बचाने के लिए खेत में डाले थे, बैतूल वन विभाग ने किसान को गिरफ्तार किया

बैतूल (नप्र)। बैतूल जिले के शाहपुर वन परिक्षेत्र में जहरीले मक्का के दाने खाने से पांच राष्ट्रीय पक्षी मोरों की मौत के मामले में वन विभाग ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि फसल को पक्षियों से बचाने के लिए खेत में जहरीले मक्का के दाने बिखेरे गए थे, जिन्हें खाने से पांचों मोरों की मौत हो गई।

खेत में मिले थे संदिग्ध मक्का के दाने- वन विभाग के अनुसार, घटना 17 जुलाई को डूडर-काजली बीट के जंगल से सटे एक खेत में हुई थी। सूचना मिलने पर वन अमला मौके पर पहुंचा, जहां जांच के दौरान खेत की मेड़ पर संदिग्ध मक्का के दाने बिखरे मिले। इसके बाद मामले की विस्तृत जांच शुरू की गई।

जांच में सामने आया पूरा मामला- वहीं जांच में पता चला कि खेत मेंढा खेड़ा निवासी रतन आदिवासी का है, जिसे कांजी तालाब निवासी कमलेश आदिवासी ने ठेके पर लिया था। पूछताछ में सामने आया कि फसल को पक्षियों से बचाने के उद्देश्य से मक्का के दानों में जहरीला पदार्थ मिलाकर खेत में फैलाया गया था। वन विभाग का दावा है कि

इन्हीं जहरीले दानों को खाने से पांचों मोरों की मौत हुई।

आरोपी ने दी सफाई- हालांकि,पूछताछ के दौरान कमलेश आदिवासी ने यह भी कहा कि उसे यह जानकारी नहीं है कि मक्का के दानों में जहरीला पदार्थ किसने मिलाया था। हालांकि, वन विभाग ने जांच में मिले साक्ष्यों के आधार पर उसे जिम्मेदार मानते हुए कार्रवाई की।

वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत केस- वन विभाग ने आरोपी कमलेश आदिवासी के खिलाफ वन्यजीव संरक्षण अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार किया और न्यायालय में पेश किया। विभाग का कहना है कि मामले की जांच अभी जारी है और अन्य पहलुओं की भी पड़ताल की जा रही है।

राष्ट्रीय पक्षी मोर क्यों है खास?

मोर दुनिया के सबसे सुंदर पक्षियों में गिना जाता है। सिर पर मुकुट जैसी कलगी और इंद्रधनुषी रंगों वाले पंख इसकी पहचान हैं। नर को मोर और मादा को मोरनी कहा जाता है।